आड़ान्दि बोंगा / विवाह मंत्र

आदि धरमानुसार मंत्र-पाठ का मुंडारी-हिन्दी संस्करण

डॉ. रामदयाल मुण्डा

रतन सिंह मानकी

आड़ान्दि बोंगा/विवाह मंत्र

आदि धरमानुसार मंत्र-पाठ का मुण्डारी-हिन्दी संस्करण

डॉ. रामदयाल मुण्डा

रतन सिंह मानकी

रम्बुल

प्रकाशक	:	रूम्बुल दिरि ओड़ाः, सरना टोली राँची कॉलेज के पीछे, राँची – 834008, झारखण्ड www.rumbul.org
सर्वाधिक सुरक्षित	:	रूम्बुल
प्रथम संस्करण	:	अगस्त, 2001
द्वितीय संस्करण	:	नवम्बर, 2016
आवरण	:	विश्वनाथ अनुपम पूर्ति
I.S.B.N.	:	978-81-932-7544-3
मूल्य	:	50 रुपये
मुद्रक	:	आई.डी. पब्लिशिंग, राँची, झारखण्ड

अनुक्रमणिका

1. प्राक्कथन 5
2. भूमिका 7
3. आड़ान्दि बोंगा 13
   - कोनेआ: ओड़ा: रे: बोओर दारोम 22
   - कोनेआ: उडुङ 25
   - बोओरा: कानाजि 27
   - कोनेआ: काजि रूनुआड़ा 29
   - बोओरा: जागर रूनुआड़ा 30
   - कोनेआ: हानाटि 33
   - बोओरा: काजि रूनुआड़ा 34
   - कोनेआ बोओर बारानकिङआ: गोआरि 36
   - एंगाआ: गोआरि 37
   - सिंदुरि राकाब 39
   - बाबाआतागुम – सेनबिउर 40
4. आड़ान्दि दुराङको 48
5. संदर्भ सूची 54
6. लेखक परिचय 55

प्राक्कथन

इससे पहले प्रकाशित आदिधर्म : भारतीय आदिवासियों की धार्मिक आस्थाएँ – एक प्रारंभिक रूपरेखा में एक प्रस्ताव था कि हर आदिवासी समुदाय अपने स्तर पर आत्मावलोकन करे और इसी चेष्टा के बीच से आदिधरम का अखिल भारतीय स्वरूप निखरे। हमें खुशी है कि आदिवासियों के काई संस्कृतिक संगठनों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। इस बीच इस विचार ने एक अभियान का रूप ले लिया है और झारखण्ड क्षेत्र में सृजनशीलता की एक लहर दौड़ गई है। पिछले जनगणना के समय तो इस उत्साह की अति भी हो गई जब कुछ संस्थाओं ने यह नारा दे दिया कि 'सरना नहीं तो गणना नहीं'। फिर भी हमारा विश्वास है कि जनगणना के परिणाम आदिधरम को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने और जनगणना की धर्मसूची में एक कोड प्राप्त करने की दिशा में आश्चर्य रूप से उत्साहवर्द्धक होंगे।

इसी उत्साह ने हमें आदिधरम के कुछ पहलुओं को बारी–बारी से विशेष रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। प्रस्तुत पुस्तिका में हमने मुण्डा समुदाय में प्रयुक्त विवाह मंत्र का विस्तृत स्वरूप रखने की चेष्टा की है ताकि इस समुदाय में इसका प्रयोग एक पाठ के रूप में करने में सहूलियत हो सके किन्तु इसके वर्तमान स्वरूप में भी यह एक प्रस्तावित प्रारूप ही है – क्षेत्रीय विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए लोगों को पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि परिस्थिति के अनुसार इसे पुनर्गठित कर सकें। हमारा विनम्र आग्रह इतना ही है कि मंत्र – पाठ के विस्तार में इस बात का ख्याल रखा जाए कि पूरा अनुष्ठान घंटा भर से अधिक समय न ले, क्योंकि आधुनिक परिवेश में इस तरह के कामों के लिए एक घंटे से अधिक समय देने में लोगों को कठिनाई होगी।

इस पुस्तिका को यथाशीघ्र तैयार करने की प्रेरणा हमें सर्वश्री पाण्डु मुण्डा, नरसिंह मुण्डा, भीम सिंह मुण्डा, प्रेमानंद सिंह मुण्डा और सेलाय मुण्डा से मिली है। इन लोगों की यह टीम मुण्डा क्षेत्र के जंगल–पहाड़ों में घूमती है और जनता की सांस्कृतिक नब्ज की स्थिति के अनुसार उपचार सुझाती है। इनका यह अभियान अनवरत निर्वाधित रूप से चलता रहे इसकी हम शुभकामना करते हैं। संध्या जी ने सदा की तरह इसकी भी पाण्डुलिपि तैयार करने में बड़े ही मनोयोग पूर्वक हाथ बटाया है। इस कष्टसाध्य कर्तव्यपालन के लिए शुभाशीर्वाद। अरिपन के श्री विश्वनाथ जी और सुकृत प्रेस के श्री अशोक पागल जी ने व्यक्तिगत रुचि लेकर जिस मुस्तैदी से पुस्तक को प्रकाशित किया है इसके लिए हम उनके प्रति विशेष आभारी हैं। सुहृद पाठकों से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में,

– लेखकद्वय

(अगस्त 2001, प्रथम संस्करण)

भूमिका

सृष्टि प्रक्रिया को कायम रखने और आगे बढ़ाने के लिए परमेश्वर ने सारी सृष्टि में विवाह की व्यवस्था की। प्राणियों के बीच तो हम यह बात देखते ही हैं, प्राणी–इतर अवयवों में भी इसका प्रतीक–विस्तार हुआ है। यथा जल वृष्टि के लिए सूर्य/आसमान के साथ धरती का विवाह। मनुष्यों में विवाह व्यवस्था इसी ईश्वरीय योजना का एक अंग है। आदिवासी समाज में सामान्यतया वयस्कता प्राप्त करने के बाद ही आदमी विवाहित जीवन में प्रवेश करता है, जब उसे घर द्वारा चलाने की पात्रता हासिल होती है। लड़के के लिए हल–जूआ बनाने आना और लड़की के लिए चटाई बिनने आना विवाह की सामान्य शर्त होती है। आवश्यक शर्तों में यह भी है कि लड़का–लड़की एक ही समुदाय किन्तु अलग–अलग गोत्र (वंश) के हों। लड़का–लड़की साधारणतः अपने परिचय के दायरे के ही होते हैं और एक–दूसरे की पसंद के होते हैं, किन्तु परिवार का समर्थन भी प्राप्त करना आवश्यक होता है।

इन दो व्यक्तियों/घरों/परिवारों को मिलाने की इस पूरी प्रक्रिया में मध्यस्थता करने वाले (अगुआ) की भूमिका अत्यंत ही महत्वपूर्ण होती है। आरंभ से अंत तक इस आयोजन का सफल समापन बहुत हद तक इसी अगुआ के समन्वय–सामर्थ्य पर निर्भर करता है। विवाह के विभिन्न वैधिक/आनुष्ठानिक चरणों– लड़की देखने, लड़का देखने, वधूमूल्य–निर्धारण करने इत्यादि में शकुन/अपशकुन– विचार से लेकर व्यवधानों को दूर करने में उसकी भूमिका सर्वाधिक महत्व की होती है। अगुआ के नेतृत्व में जब दोनों पक्षों के लोग आश्वस्त हो जाते हैं कि प्रस्तावित विवाह–संबंध को आगे बढ़ाया जा सकता है तो उसकी नियमितीकरण की प्रक्रिया शुरू की जाती है। इस प्रक्रिया के तीन मुख्य चरण होते हैं– लड़की (कन्या) देखना, लड़का (वर) देखना और विवाह।

लड़की (कन्या) देखना

अगुआ के साथ वरपक्ष के कुछ (5–7–9) जानकार/अनुभवी लोग जिनमें बिरादरी और कुटुम्ब के लोग होते हैं, तेल पूजन के बाद लड़की के घर जाते हैं। वहाँ पहुँचने पर स्वागत–सत्कार के बाद औपचारिक बातचीत शुरू होती है जिसे इस तरह प्रस्तुत किया जा सकता है :

कन्या पक्ष – प्रिय मेहमानो, ऐसे तो हमें हाटबाजार में और रास्ता चलते भेंट होने पर एक दूसरे के कुशल–मंगल का पता चल ही जाता है किन्तु आज आपलोगों का इस तरह अचानक लाठी–डंडा लेकर आ जाना हमें आश्चर्य में डाल रहा हैं। जरूर कोई प्रयोजन होगा। कृपया बताएँ।

वर पक्ष – नहीं, प्रिय मेहमानों, डरने जैसी कोई बात नहीं है। दरअसल हमलोग शिकार को निकले हुए हैं। इसी क्रम में जंगल में हमारे तीर से घायल एक हिरनी का पीछा करते–करते हम आपके गाँव तक आ गए हैं।

कन्या पक्ष – घायल हिरनी? (अपने लोगों की तरफ मुखातिब होकर) अरे सुनते हो भाई! घायल हिरनी कहते हैं। किसी ने देखा? जवाब मिलता है– नहीं हमने नहीं देखा। यहाँ कोई हिरन नहीं आया।

वर पक्ष – नहीं, यह कैसे हो सकता है! हमने तो उसे इधर ही भागते हुए देखा है।

कन्या पक्ष – अरे कोई जाकर देखो, हमारे गोहार में बकरियों के साथ घुस तो नहीं गई है।

एक आदमी गोहार देखने के नाम पर घर के अन्दर जाता है और थोड़ी देर के बाद भावी दुल्हिन को बीच में लिए हुए उसकी सहेलियाँ, जिनमें एकाध नाते में दादी लगने वाली औरतें भी होती हैं, एक कतार में निकलती हैं और पंक्ति में बैठे बिरादरी के लोगों और नए मेहमानों को बारी–बारी से जोहार करती हुई आगे बढ़ती हैं। इसी बीच लंगड़ाती चल रही प्रौढ़ स्त्री को इंगित कर हँसी–मजाक स्वीकार्य रिश्तावाले नए मेहमान परिहास की भाषा में कहते हैं– "हाँ, हाँ, वही! उसी को हमारा तीर लगा है, अब भी लंगड़ा रही है। ठहाकों के बीच कोई एक कहता है– अगर वही है तो उसे ठीक से चिह्नित करना चाहिए। रस्सी से बांधना चाहिए।"

इसी बीच सबको जोहार करने की औपचारिकता समाप्त होती है और भावी दुल्हिन और उसकी एक सहेली लोटे में पानी और साथ में थाली लिए मेहमानों के पैर धोने को आती है। वरपक्ष में से एक बुजुर्ग कहता है– "भाइयो, यही मौका है इस हिरनी को बांधने का। किधर है फलना, लड़के का मामा?" तदुपरान्त लड़के का मामा या उसका समकक्ष संबंधी अपना पैर धुलाता है और आशिर्वाद स्वरूप एक साड़ी लड़की को उढ़ाता हैं उसके बाद शेष सारे मेहमानों के पैर धोए जाते हैं। दोनों पक्षों के लोग एक दूसरे को जोहार करते हैं। चूना–तम्बाकू से लेकर खान–पान होने तक एक दूसरे के साथ होते हैं। इसी बीच अगुआ की देख–रेख में वर देखने की तिथि निर्धारित होती है और उसी दिन फिर मिलने के निर्णय के साथ मेहमानों को विदा किया जाता है।

लड़का (वर) देखना

निर्धारित तिथि को लड़की देखने के समय की ही तरह तेल पूजन के उपरान्त लड़की दल अगुआ के नेतृत्व में लड़की के घर से सूर्योदय के पहले ही प्रस्थान करता है। लड़के का घर पहुँचने पर वहाँ उनका औपचारिक स्वागत होता है और बैठने को जगह देने के बाद जलपान दिया जाता है। जलपान के बाद चूना–तम्बाकू के बीच ही वरपक्ष की ओर से एक आदमी निवेदन करत है और आने का प्रयोजन पूछता है। लड़की वालों की ओर से जवाब करीब–करीब इस प्रकार होता है–

मेहमानों, हमारे इस तरह से अचानक आने का कारण है कि नदी के किनारे हमने कद्दू और कोंहड़े की खेती की है। इधर कुछ दिनों से हमने पाया कि एक अरना काड़ा अपने सींग से घेरा तोड़कर हमारे खेत में घुस रहा है और फसल चर जा रहा है। दौड़ाने पर वह इधर ही भाग जाता है। आज हम उसी के पंजों का पीछा करते हुए यहाँ तक पहुँच आए हैं।

वर पक्ष – "घेरा तोड़ने वाला अरना काड़ा?"

कन्या पक्ष – "हाँ, बड़े सींगों वाला ही होगा क्योंकि बगल के कुछ आड़–मेड़ों तक को उसने धसा दिया है।"

वर पक्ष – "अरे देखो कोई। हमारे काड़ाओं में से कोई ऐसा कर रहा है क्या?"

कन्या पक्ष – "हाँ, हाँ हम देखने पर अवश्य ही पहचान लेंगे।"

वर पक्ष – "(बिरादरी के लोगों की तरफ मुखातिब होकर) अरे जाओ, देखो, किस काड़े की ये बात कर रहे हैं।"

तदनन्तर गोहारघर देखने के नाम पर एक आदमी घर के अन्दर प्रवेश करता है और थोड़ी देर के बाद भावी दुल्हे को बीच में किए हुए उसके साथियों सहित बाहर निकलता है। साथ में एक–दो मजाकिया बुजुर्ग लोग भी होते हैं, पंक्ति में बैठे हुए ग्रामवासियों और मेहमानों को जोहार करते हुए आगे बढ़ते हैं। बाहर लाए हुए "काड़ाओं" में एक "बूढ़ा काड़ा" अपने सींग हिलाकर हड़बड़ाने का नाटक करता है। नवागन्तुक मेहमानों में से एक हो–हो करते हुए बोल उठता है– "हाँ, हाँ यही है।" इसी का काम है। दूसरा हामी भरता है– "हाँ, हाँ इसके सींगों को देखने से ऐसा ही लगता है।" इसी का काम है। दूसरा हामी भरता है– "हाँ, हाँ इसके सींगों को देखने से ऐसा ही लगता है।" इसी तरह ही हँसी ठहाकों के बीच जोहार की औपचारिकता समाप्त होती है और भावी दुल्हा अपने साथ साथी के साथ सबके बीच बैठ जाता है। "अगर यही वह काड़ा है तो उसे एक मजबूत रस्सी से बाँधना चाहिए।" कहते हुए लड़की का मामा या उसके समकक्ष का संबंधी लड़के को एक धोती उढ़ाता है। लड़का उठकर फिर एक बार कृतज्ञता–ज्ञापन के रूप में सबको जोहार करता है।

इसके बाद की प्रक्रिया "दर–दाम" करने की होती है। दोनों तरफ के लोग अलग–अलग बैठ जाते है और अगुआ प्रतीकों पर आधारित उनकी बातचीत को आगे बढ़ाता है। शाल की पत्तियों से "हल–बैल" और कचनार/आसन के बीजों से "रुपयों के प्रतिक बनाकर लड़की वालों की तरफ से वधूमूल्य के रूप में सामान्यतया एक जोड़ा बैल, कुछ कपड़ों और रुपयों का प्रस्ताव आता है। प्रस्ताव पाकर वरपक्ष "आनंदित" होने का नाटक करता है– "यह तो अत्यंत ही शुभ शकुन की बात है कि हमें ऐसे लोग नए मेहमानों के रूप में मिल रहे हैं जो ना केवल लड़की देंगे वरन् साथ में ये सारी चीजें भी देंगे।" वे

नए मेहमानों के "बड़पन" की प्रशंसा करते हुए एक मुद्रा घटाकर यह कहते हुए कि जब देना ही चाहते हैं तो नाम मात्र को एक रूपया स्वीकार करते हैं। शेष चीजें उधर ही काम में लाई जाएँ। प्रस्ताव की डलिया लड़की वालों की तरफ़ वापस जाती है प्रस्तावित सारी चीजें जैसी की तैसी वापस पाकर लड़की वालों की तरफ वापस जाती है। प्रस्तावित सारी चीजें जैसी की तैसी वापस पाकर लड़की वाले "आश्चर्य" प्रकट करते हैं— कैसे लोगों से पल्ला पड़ा। इतने कंजूस! हमारी बेटी का मूल्य मात्र एक रुपया आंकते हैं। और कुछ देना नहीं चाहते। वे अगुआ को "डाँट फटकार" कर फिर वापस करते हैं और लड़के वालों को समझाने के लिए कहते हैं। अगुआ लड़का वालों को बताता है कि लड़की वाले उतनी उतनी सारी चीजें "वधूमूल्य" के रूप में पाना चाहते हैं न कि लड़की के साथ देना। अगुआ उन्हें बताता है कि बेटी के चले जाने से जो क्षति होगी उसकी पूर्ति के रूप में यह मूल्य माँगा जा रहा है। इस तरह से आपसी संवाद की "गलतफहमियों" को दूर किया जाता है और अंततः वधूमूल्य कुछ रुपयों और कपड़ों के रूप में तय होता है। इसके बाद दोनों तरफ की सुविधाओं और परम्पराओं को देखते हुए विवाह का दिन तय करते हैं और उसके साथ यथायोग्य खान–पान के बाद नए मेहमानों को विदा किया जाता है।

लड़की देखने और लड़का देखने की दोनों यात्राओं में शकुन–दर्शनों पर ध्यान रखा जाता है। वैसे तो सारी यात्रा के दौरान देखी गई घटनाओं पर नजर रखा जाता है किन्तु दोनों गाँव की सीमाओं के भीतर देखी गई घटनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शुभ–अशुभ संकेतों का संक्षिप्त ब्योरा नीचे दिया जाता है :–

शुभ संकेत

- गाय का बछड़े को दूध पिलाना।
- किसी स्त्री द्वारा पानी भरा घड़ा सिर पर लिए चलना
- किसी खूंखार जंगली (बाघ, साँप) जानवर का रास्ता बिना काटे अपने ही रास्ते में चलते जाना।
- चिड़ियों का मिलन– कलरव।

अशुभ संकेत

- गाय से बिछुड़े बछड़े की आवाज।
- किसी स्त्री द्वारा खाली घड़ा सिर/कमर पर लिए चलना।
- किसी खूंखार जानवर द्वारा रास्ता रोकना या अपने शिकार को धर दबोचना।
- किसी के द्वारा पेड़ काटे जाने की आवाज।

दोनों पक्षों द्वारा देखे गए शकुन–अपशकुनों पर गणना विचार "वधूमूल्य निर्धारण" के पहले ही होता है। शुभ शकुनों पर खुशी का इजहार किया जाता है और अपशकुनों पर उभयपक्षों की सकरात्मक दृष्टि होने पर शकुन–अपशकुन विश्लेषण भी सकारात्मकता की ओर निर्दिष्ट होते हैं। किन्तु अत्यंत ही भयावह संकेतों द्वारा अपशकुन दर्शन होने पर संबंध वार्ता टूट भी सकती है। यथा सामान्य स्थितियों में किसी पेड़ की डाली का अचानक टूट जाना या किसी बड़े जानवर (हाथी, बाघ, साँप) द्वारा रास्ता रोकना या अपने शिकार को धर दबोचना, इत्यादि।

विवाह की तैयारी में नियत तिथि के एक महीना पहले से दोनों पक्षों की ओर से निमंत्रण– संदेश अपने संबंधियों को भेजे जोते हैं। हल्दी में रंगे चावल के दाने सुपारी के साथ शालपत्र में दिए जाते हैं। निमंत्रण– संदेश में मण्डपाच्छादन, हल्दी–तेल, बारात प्रस्तान/आगमन एवं विवाह की तिथियों सम्मिलित होती हैं।

तैयारी

मण्डापच्छादन

निश्चित तिथि को सुबह गाँव के पुरूष नजदीक के जंगल से शाल की डालियाँ ले आते हैं और विवाह मण्डप छाते हैं। मण्डप में पूजास्थल (विवाह–वेदी) के चार खूँटे वर–कन्या के बहनोई द्वारा गाड़े जाते हैं। वही वेदी के बीच के खूँटे से लगाकर महुआ, बाँस, भेलवा और ओतरों की लताएँ (सभी दीर्घजीवन, समृद्धि और शुचिता के प्रतीक) बाँधता है। वेदी का निर्माण एवं अल्पना द्वारा उसकी सजावट दो कुमारी लड़कियों द्वारा सम्पन्न होता है। मण्डपाच्छादन का काम पूरा होने पर इस काम में लगे सभी को हँड़िया पीने को दी जाती है।

हल्दी तेल

विवाह–वेदी को सजाने वाली लड़कियाँ वर/कन्या को तेलमिश्रित हल्दी लगाती हैं और आनेवाले शुभ अवसर के लिए उसे मानसिक रूप से स्थिर करती हैं। "स्थिर" इसलिए कि इसके बाद वर/कन्या को घर से बाहर निकलने की मनाही होती है। अगर वह निकलता/ निकलती भी है तो कोई न कोई साथ होता है।

आड़ान्दि बोंगा

(बोओर–ओड़ाःरे : कोनेआ आगु सेनोः सिदा माण्डोआ बोंगा–

बोओर साः रेनको कोनेआ आउको साम्पोड़ोआकाना। एन सिदारे बोओराः सासाङ सुनुम होबा चुकाओआकाना। माण्डोआतम बोओंगा साम्पोड़ोको–

बारिआ चुकाःकिनरे बाबा, दिआ, सेंगेल, आदोआ चाउलि, बेरेल सासाङ, गोलांचि बा, आदोआ सुताम, सिंदुरि, सिङबोंगा नांगेन आता–ताबेन, बुरु बोंगा नांगेन, उसना चाउलि, इकिर बोंगा नांगेन दाः–उलि साकाम मोड़ें चोम्पा।

बोओर बाबू माण्डोआरेः दुबाकाना। पांआड़ा उलिसाकाम चोम्पाते दाः हिरचि लेआते बोंगाको आर दुबाकान होड़ोकोएः 'रेआड़ा जादकोआ'। दिआएः जुलजादा। बोंगाको नावा लिजाः (आदोआ सुताम) एः ओमाकोताना।

विवाह मंत्र

वर के घर पर : कन्या लाने के लिए निकलने से पहले मण्डप पूजा।

(वर पक्ष के लोग कन्या लाने के लिए जाने को तैयार हैं। इसके पहले वर का हल्दी–तेल हो चुका है। मण्डप में पूजा सामग्री–

दो चुक्कड़ों में धान, ऊरद, दीया, आग, अरवा चावल, अक्षत, कच्चा हल्दी, गोलांचि फूल, कच्चा धागा, सिंदूर, सिङ.बोंगा के लिए मुडि–चुड़ा, बुरु बोंगा के लिए उसना चावल, इकिर बोंगा के लिए पानी–आम की पत्तियां आदि रखी हुई हैं।

वर बाबू मण्डप में बैठा हुआ है। पाहन आम की पत्तियासें से पानी छिड़क कर देवताओं और बैठे हुए लोगों को 'स्नान' कराता है। दीप जलाता है। देवताओं को 'नए वस्त्र' (कच्चा धागा) देता है। उनका श्रृंगार

सिंगार जादकोआए:– बोंगाको नागेन आपिआ आर ओड़ा: बोंगाको हाड़ाम होड़ोको नागेन मोंड़ेआ टिकाते। बोंगा टायादरे सुगाड़ा सोआन पेरेगाकानो: का मेनते धुनाए: रापा: जादा। बोंगा एटेगो: ताना।)

करता है– देवताओं के लिए तीन और पुर्खों के लिए पाँच लकीरें खींचता है। पूजा स्थल सुगंधित हो इसलिए वह धुवन जलाता है। पूजा आरंभ होती है।)

सोबेन बोंगाको रा:होपोर–

हे सिरमारेन सिङबोंगा
ओतेरेन ओते एंगा
तोआ लेका तुरो:किन
दहि लेका हासुरो:किन।
आबेनगे मुनु रेनकिन
आबेनगे टुण्डु रेनकिन
आबेनगे सुबा रेनकिन
आबेनगे चुटि रेनकिन।।

जोनोमाते हानसा: रेनकिन
गोनोए:आते पारोमरेनकिन
जूग जूग जीदो:किन
जानाओ जानाओ ताइनो:किन।
होयोरे जी ओओमकिन
दा:रे मायोम सीरजाओकिन
सिरमारे गुयु तूरुबकिन
ओतेरे हिता पारचाओकिन।।

आले आबेना: होनको नागेन
आले आबेना: गांड़ाको नागेन
दा: बितार उकुआकान
जालाकार बितार दानाङाकान।
हाइ दुताम, काड़ाकोम दुताम

सर्वदेवता संबोधान–

हे स्वर्ग के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माँ
दूध–सा उगने वाले
दही–सा डूबनेवाले।
तुमही आदि के हो
तुमही अन्त के हो
तुमही मूल के हो
तुमही चोटी के हो।।

जन्म से उस पार के हो
मृत्यु से उस पार के हो
युग–युग जीवन्त
सदा से स्थापित।
हवा में प्राण देने वाले
पानी में खून से सृजनहार
आकाश में घर बनाने वाले
धरती में बीज बोने वाले।।

अपनी संतान के लिए
अपनी अवलाद के लिए
पानी के नीचे छिपी (धरती)
समुंदर के नीचे दबी (पृथ्वी)।
मछली के दूत बना, केकड़े को दूत बना

होरो दुताम, लेण्डाद दुताम	कछुआ को दूत बना, केंचुआ को दूत बना
ओतेबेन बाइकेदा	तुमने उस (पृथ्वी) का निर्माण किया
धरतीबेन बाडुइकेदा।।	तुमने उस (धरती) का सृजन किया।।
सिंगी तुरोः, चाण्डुः मुलुः	पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा
काटा जाम्बाड़ा, बाओ कुन्दुड़ि	उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा
आबेनाः कोयोङरे, आबेनाः सिपिङरे	तुम्हारी गोदी में, तुम्हारी अंजलि में
आबेनाःगे सिरजान, आबेनाःगे उपुजान।	तुम्हार ही सृजन, तुम्हारी ही उत्पत्ति।
जिलिमिलि ओते	झिलमिलाती धरती
लिबिलिबि सिरमा	लिबलिबाता आसमान
पाटि लेका बिलाकाना	चटाई की तरह बिछी हुई
डुबा लेका हारुबाकाना।।	डूभा की तरह औंधा हुआ।।
ओते चेतान टुण्डाङतानिः	जमीन पर रेंगने वाले को
लाता बितार उगुराकानिः	खोह में छिपे हुए को
होयोरे आपिर ओटाङतानिः	हवा में उड़ने वाले को
दाः बितार ओयारतानिः।	पानी में तैरने वाले को।
जोम नू ओओमकिन	दाना–पानी देने वाले
दाः तासाद हाआटिंकिन	घास–पानी देने वाले
ऊमबुलकिन, चाआतोमकिन	छाया देने वाले, छतरी देने वाले
होओरोकिन, जाआंगिकिन।।	रखवाली करने वाले, सुरक्षा देने वाले।।
तारा निदा, तारा सिंगि	आधा समय रात, आधा समय दिन
सेताः सिंगाड़ा, तिकिन तारासिङ	सुबह, शाम, दोपहार, अपराह्न
कामि सोमाए तोओलकिन	काम का समय बांधने वाले
रुडुन सोमाए ठाआराओकिन।	आराम का समय ठहराने वाले।
सिंगि–चाण्डुः, इपिल रिम्बिल	सूरज–चाँद, तारे–आसमान
रोकोम हिता, रेएद–रानु	विभिन्न बीज, जड़ी–बूटियाँ
आनाः मानाः जो सिबिल	किस्म–किस्म के स्वादिष्ट फल
दिरि–दारु, तासाद रूड़ाः।।	पत्थर–पेड़, घास–फूस।।

साब दाड़िनबेन ताबु
जापाः दाड़िनबेन ताबु
सीबेन, चालुइबेन
रुड्डुङेबेन, सेटेःएबेन।।

नी ताबेन उरिः एंगा
हिनि ताबेन मेरोम एंगा
नी नेरे बाबा एंगा
हिनिः एनरे कोदे एंगा।
जीदान होरो गोओड़ोमको
तोआ माण्डि ओओमको
लेलकोबेन, हिराकोबेन
जोगाओकोबेन, जोतोनकोबेन।।

कुरुमुटु कामिबेन
बालबालदाः जोरोएबेन
हेर चाटाः, बिद चाटाः
नामेआबेन हाटाः हाटाः।
दाः लेका बिड़िसिरोगा
गितिल लेका ताकिदोगा
टुंकिरे, सेएलरे
पोटोमरे, चाटाकारे।।

मेद पेरेःबेन लेलेआ
लाइ पेरेःबेन जोमेआ
मेनतेबेन काजिकेदा
मेनतेबेन बांकाड़ाकेदा।
जू मानोआ होनकिन
जू मानोआ गांड़ाकिन
मांदुकाम बा लेकागे
कुइडि जो लेकागे।।

इसे तुम ठीक से पकड़ो
इसे तुम ठीक से जकड़ो
जोतो तुम, कोड़ो तुम
कुटो तुम, छाँटो तुम।।

यह रही गौ माता
यह रही बकरी माता
यह यहाँ धान माता
यह यहाँ कोदो माता।
यही जीवन के रक्षक
यही दूध–भात देने वाले
इन्हें तुम देखो, निहारो
इन्हें तुम जुगाओ, जतन से रखो।।

मेहनत करो
पसीना बहाओ
बुनो, रोपो
भरपूर पाओ।
पानी की तरह थमे
बालू की तरह थमे
टोकरी में, ओखली में
मेरे में डिमनी में।।

आँख भर कर देखोगे
भरपेट खाओगे
यही तुमने उनसे कहा
यही तुमने उन्हें बताया।
जाओ मानव संतान
जोओ मानव संतति
महूआ के फूल की तरह
डोरी के फूल की तरह।।

सिरजाओआकादलेआबेन
उपुजानाकादलेआबेन
सोतोःआकादलेआबेन
सांगोमाकादलेआबेन।
गुडुलु, सारजोम, माद, मांदुकाम
बाड़े, सेकेरेः, कादाला, काराम
सोसोदारु सुबा सानामाङ
अखंड बिर–बुरु दानाङ।।

तुमने हमारे लिए बनाए
तुमने हमारे लिए उपजाए
तुमने हमारे लिए जुगाए
तुमने हमारे लिए संजोए।
गोंदली, सखुआ, बाँस, महुआ
बड़, सेकरे, केला, करम
भेलवा पेड़ के नीचे
अखंड वन–पहाड़ के बीच।।

लुटुकुम हाड़ाम लुटुकुम बुड़िआ
एनेटेः कुलगिआकिन
आलेआः सिदा पुरखाकिन
आलेआः जाओ हाड़ामकिन।
डुमाङ हासाते, आंजिलि दाःते
होड़ोमो हुमुते, मोलोङबालबालते
बाइकेदकिनाबेन
बाडुइकेदकिनाबेन।।

लुटकुम बूढ़ा, लुटकुम बुढ़िया
प्रारंभ के पति–पत्नी
हमारे बूढ़े–पुरखों को
हमारे आदि पूर्वजों को।
मिट्टी के ढेले से, अंजलि पानी से
शरीर के मैल से, माथे के पसीने से
तुमने उन्हें बनाया
तुमने उन्हें गढ़ा।।

चुकाः बांडा दाःते
उलि साकाम चोम्पाते
हिरचिकेदकिनाबेन
तिरपिकेदकिनाबेन।
एन हासा होड़ोमोरे
एन रोओड़ो मुटुरे
जीबेन ओमकेदा
सायादबेन आदेरकेदा।।

कलश के पानी से
आम पत्तियों के गुच्छे से
तुमने उन्हें झिमकाया
तुमने उन्हें छिड़काया।
उस मिट्टी के शरीर में
उस सूखी लकड़ी में
तुमने जीवन डाला
तुमने प्राण फूँके।।

मानोआ होन, मानोआ गांड़ा
जू ताञ दुलाड़ाकिन
नेः ताबेन काड़ाबा डांडि
हेनेः ताबेन सेएल कुटि।

हे मानव संतति, हे मानव संतान
जाओ मेरे प्यारे, जाओ मेरे [illegible]लारे
यह रही हल की मूठ
यह रहा ओखल स्थल।

ने .... हातु सिमानरेन
माराङ बुरु, हुड़िङ बुरु
माराङ इकिर, हुड़िङ इकिर
मांडा बुरु, देसाउलि।।

इस .... गाँव की सीमा के
बड़े पहाड़, छोटे पहाड़
बड़े जलाशय, छोटे जलाशय
माड़ा पहाड़, देसाउलि देव।।

नागे एरा, बिन्दि एरा
चांडि एरा, जायार एरा
तोरो कोड़ा, चोड़ेआकोड़ा
बिर माआरा, जोटो माआरा।
एएआ गाड़ा पारोमरेनको
आरेआ बुरु दानाङरेनको
राः का तेबाःजानको
नुतुम का टोःजानको।।

नाग देवी, बिन्दी देवी
चंडी देवी, जाहेर देवी
तोरो कोड़ा, चोड़ेया छोरा
वन महरा, जोटो महरा।
सात नदियों के उस पार के
आठ पहाड़ों के उस पार के
जिन्हें हम बुला नहीं पा रहे हैं
जिन्हें हम न्योत नहीं पा रहे हैं।।

हुड़िङ जी आलोपे ताइना
हांड़ा जी आलोपे ताइना
सोबेनगेले जोआरआपेताना
जोतोगेले गोआरिपेताना।
कोदे होलोङ कोंडाताला
बाबा होलोङ माण्डोआताला
पिताल पुडुः, रांगा चारिः
जिलिबजिलिब दिया सेंगेल।।

तुम हृदय छोटा ना करो
तुम मन में नाराज न रहो
हम सबको जोहार करते हैं
हम सबको गुहार करते हैं।
महुआ—आटे के घेरे में
चावल—आटे के मण्डप में
पीतल का दोना, रंगीन तिल्ली
झिलमिल करती दीया—बत्ती।।

दोआकाना, दोड़ोमाकाना
सोना दाः, रुपा धुना
हिरचि दारोमतानाले
आतार दारोमतानाले।
सेन दुताम, कुपुल होरा
सेन दाराड़ा, हागा डारे
हाराकान कोड़ाहोन ....
माताकान कुड़िहोन ....।।

रखा हुआ, धरा हुआ
सोना—पानी, रूपा धुवन
स्वागत में छिड़कते हैं
अगुआई में जला रहे।
खोज—खबर, संबंध—मार्ग
पूछ—ताछ, बंधु—डगर
बढ़ा हुआ लड़का ....
बढ़ी हुई लड़की ....।।

पाआःगे पोओःगे	फूलो, फलो तुम
पोआओःबेन, पोसाओःबेन	पलो, बढ़ो तुम
लेपालाड़ी बाड़ेलेका	विस्तृत वट–वृक्ष की तरह
गोटा दिसुम दालोबेबेन।	सारी पृथ्वी पर छा जाओ।
हेर पुना, रोआ पुना	प्रथम बोआई, प्रथम रोपनी
एन पुना, जोम नावा	प्रथम दंवनी, नवा खानी
बा–बाताउलिरे	सरहुल, बुरू, बाताउलि के दिन
आड़ान्दिरे, कोड़ान्दिरे।।	विवाह में, शादि में।।
ने सारजोम सुबारे	इस साल वृक्ष के नीचे
दिआ सेंगेल सामाङरे	दीआ और अग्नि के समक्ष
जोआरबेन, गोआरिबेन	तुम जोहार करो, गुहार करो–
मेनतेबेन काजिकेदा।	इस तरह तुमने उन्हें कहा।
आबेनाः उदुब होराते	तुम्हारे बताये रास्ते पर
आबेनाः चुण्डुल डारेते	तुम्हारे इंगित मार्ग पर
तिसिङ ने .... हातु रे	आज इस .... गाँव में
.... ताकोआः राचा रे।।	आज .... के आंगन में ।।
जिलिमिलि माण्डोआरे	झिलमिल करते मण्डप में
उम्बुलान जाम्बाडा लातारे	छायादार छादन के नीचे
मोंड़े हागा तालारे	पाँच भाइओं के बीच
कुपुल गंगा जापाःरे।	कुटुम्ब–बंधुओं के समक्ष।
जोतोगे जोम्बोर–जुडि	हम सभी मिलजुलकर
तीरे ती सांगोमकेआते	हम सभी हाथ जोड़कर
काटा सुबा तिरुबकेआते	तुम्हारे पैरों पर झुके हुए
जोआरतानाले, गोआरितानाले।।	तुम्हें जोहार करते हैं, गुहार करते हैं।।
ने तुड़ि सुतामते	इस सुत के धागे से
ने बादि बायारते	इस बंधन रस्सी से
नोसोर हाड़ागुकोःबेन	पास उतर आओ
होपोरजापाःकोःबेन।	नजदीक खिसक आओ।

आलेआः सेन होरा रे	हमारे जाने के रास्ते में
आलेआः सेन डारे रे	हमारे चलने की डगर में
लाइः हासु आलोका ताइन	कोई पेट दर्द न हो
बोओः हासु आलोका ताइन।।	कोई सिर दर्द न हो।।
रुआ राबाङ आलोका ताइन	कोई ज्वर–जाड़ा न रहे
उला–झाड़ा आलोका ताइन	कोई कै–दस्त न रहे
हुआङ–चोगा आलोका ताइन	कोई गड्ढा–खोंचा न रहे
तोद–तुगुड़ि आलोका ताइन।	कोई ठेस–ठोकर न रहे।
लांदातान, जागारतानगे	हँसते–बतियाते ही
सुसुनतान, दुराङतानगे	नाचते गाते ही
सेन तेबाः नामेकाले	हम वहाँ पहुँच पाएँ
सेटेर तिउः नामेकाले।।	हम वहाँ जा पाएँ।।
.... सिमान बुरु बोंगा	.... गाँव के पहाड़ी देवता
माराङ इकिर, हुड़िङ इकिर	बड़ा जलाशय, छोटा जलाशय,
नागे एरा, बिन्दि एरा	नाग देवी, बिन्दी देवी,
चांडि एरा, जायार एरा।	चंडी देवी, जाहेर देवी।
कुपुलते, कुटुमते	बंधुओं के साथ, कुटुम्बों के साथ
पाउनिते, पारजाते	आश्रितों के साथ, प्रजाओं के साथ
लेलदारोग लेकाको	लोग हमारा स्वागत करें
आतेनदारोम लेकाको।।	लोग हमारी अगुआई करें।।
माराङ हानार, हुड़िङ हानार	बड़ी सास, छोटी सास
लान्दातान, जागारतानगे	हँसते हुए, बतियाते हुए
हिरचि दारोमलेकाको	पानी छिड़क कर अगुआई करें
आबुङ दारोमलेकाको।	पैर धोकर स्वागत करें।
चोः दारोमलेकाको	चूमकर स्वागत करें
चुमान दारोमलेकाको	चुमावन कर स्वागत करें
हेबे दारोमलेकाको	गोद लेकर स्वागत करें
हातार दारोमलेकाको।।	गले लगाकर स्वागत करें।।

जीदान जुड़ि जुड़िरे
इनकिन कुलगिआ बाआइरे
मोद तोआब साउड़िते
बारिआ ओड़ाः दाआबरे।
ने कुपुल जोड़ाओरे
ने कुटुम जानापाःरे
मिद गाण्डु मिद पान्ति
इनकिन दुबरे, जारुरे।।

उनकी जोड़ी जोड़ने में
उन्हें दम्पत्ति बनाने में
एक मुट्ठी खेर से
दो घर छाने में।
इस संबंध को जोड़ने में
इस कुटुम्ब को बांधने में
एक पीढ़े में, एक पान्ति में
इन्हें बैठाने में, इन्हें जुटाने में।।

का बुगिनाः मेनाः रेदो
का नापाएआः मेनाःरेदो
कुःते, चा हाचुःते
जेता रोकोम साड़ाते।
लेलेआःले लेलेका
आयुमेआःले आयुमेका
मेनतेले गोआरिकेना
मेनतेले बिनतीकेना।।

अगर कुछ भी अशुभ हो
अगर कुछ भी अपशकुन हो
खांसकर या छींककर
किसी प्रकार की आवाज से।
द्रष्टव्य हम देखें
श्रव्य हम सुनें–
इस तरह हमने प्रर्थना की थी
इस तरह हमने विनती की थी।।

आलेआः सेन होरा रे
आलेआः सेन डारे रे
सोबेनाः बुगिनगे
जोतोगे नापाएगे।
दिन मुडि तेबाः जाना
बोछोर नेण्डा सेटेरजाना
मोड़े हागा इदिकेकोआते
कुपुल गंगा गारकाकेकोआते।।

हमारे चलने के रास्ते में
हमारे निकलने की डगर पर
सब कुछ शुभ रहा
सब कुछ सफल रहा।
निर्धारित दिन पहुँच गया है
सुनिश्चिय घड़ी आ गयी है
पाँच भाइयों को लेकर
कुटुम्ब–बंधु को साथ कर ।।

जूग–जूग जीदान जुड़ि
सेले बोले नावा किमिन
सुतुः आउले सेनोःताना
गोंगोर आउले बिरिदताना।

युग–युग की जीवन जोड़ी
नवयुवती, नई बहू
ले आने हम जा रहे हैं
साथ लाने हम जा रहे हैं।

(कोनेआः एंगा–आपुकिन बोओर बाबुकिन दुब तालाताःइया। कोनेआः आपु बोओराः जोमसाःरे)

(कन्या के माता–पिता वर बाबू को बीच में बैठाए हुए हैं। कन्या का पिता वर ही दाहिनी ओर।)

हे सिरमारेन सिङबोंगा
ओतेरेन ओतेएंगा
आबेनाः उम्बुल लाताररे
आबेनाः कोयोङ चेतानरे।
.... सिमान, ... सिमान
सिंगितुरोः चाण्डुः मुलुः
काटा जाम्बाड़ा, बोओः कुन्दुड़ि
जेएगे बोंगा मेनाःपेआ।।

हे स्वर्ग के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माँ
तुम्हारी छाया तले
तुम्हारी गोदी के ऊपर।
.................., गाँव की सीमा के
पूरब दिशा, पश्चिम दिशा,
उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा
जो भी देवता रहते हैं।।

बुरु बोंगा, इकिर बोंगा
मांडा बुरु, देसाउलि
बा जायार, जिलु जायार
चाण्डि एरा, नागे एरा।
सामामोचा, सामालाइः
सेंगेल सानामाङ, दाः सानामाङ
जोआर तानाले, गोआरितानाले
आयुमलेपे, आतेनलेपे।।

पहाड़ी देवता, जल देवता,
मांडा पहाड़, देसाउली देव
सरहुल जाहेर, शिकार जाहेर
चंडी देवी, नाग देवी।
खाली, मुंह, खाली पेट
अग्नि के समक्ष, जल के समक्ष
हम जोहार करते हैं, हम गुहार करते हैं
हमारी बात सुनो, हमारी बात गुनो।।

तिसिङ आबु हातु बिताररे
तिसिङ आबु ओड़ाः राचारे
नावा होड़ो, नावा सेपेड़ेद
दुबाकानाएः, जारुआकानाए।
मोड़े हागा इदिकेआते
कुपुल गंगा सुतुःकेआते
लोगोनेः ओमलेना
दिन नेण्डाएः तोललेना।।

आज हमारे गाँव में
आज हमारे घर–आँगन में
नया आदमी, एक नौजवान
बैठा हुआ है, आगत है।
पाँच भाइयों को लाकर
कुटुम्ब–बंधुओं को साथ कर
उसे लगन दिया गया था
उसे समय दिया गया था।।

सिङबोंगा उम्बुलरे	परमेश्वर की छाया में
ओते एंगाआः कोयोङरे	धरती माँ की गोद में
मोंड़े हागा सानामाङरे	पाँच भाइयों के समक्ष
कुपुल गंगा जानापाःरे।	कुटुंब–बंधुओं के समक्ष।
ने आड़ान्दि नेएगताले	विवाह का यह अनुश्ठान
ने कोड़ान्दि नेएगताले	शादी का यह दस्तूर
बुगिगे पारोमोःका	अच्छी तरह बीते
सुगाड़ागे सांगोमोःका।।	शुभ सम्पन्न हो।।
एदकान काजि रेएदरे	बुरी बात जड़ में
काबुगिन काजि बुटारे	अशुभ बात मूल में
हादते हादोःका	जड़ के कट जाए
तुदते तुदोःका।	समूल उखड़ जाए।
आले तालाते हिसिंगा–चेण्टा	हमारे बीच से ईर्ष्या द्वेष
आले तालाते हिलाङ–हेन्दो	हमारे बीच से घृणा भाव
आतुगिड़ि बुआल गिड़िओःका	बहकर चला जाए
ओटाङगिड़ि–दोपालगिड़िओःका।।	उड़कर चला जाए।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जेहार! (पुष्प दान)
(माण्डोआ बोंगा तायोमते बोओर उलि साकि जोमेः सेनोःताना आर एनतेआतेगे कोनेआः हातुते उडुङोःताना)	(मण्डप पूजा क बाद दुल्हा 'आम्र साक्षी' के लिए जाता है और उधर ही से कन्या के गाँव जाने के लिए निकल जाता है।)

कोनेआः ओड़ाःरे बोओर दारोम — कन्या के घर वर का स्वागत

मांडोआ सामपोड़ो को सिदालेकागे, पुडु रे रोला, लुपुङ, कसइलि, मोड़े टाका, सासाङ चाउलि	पूजा सामग्री पहले की तरह, इसके अतिरिक्त, हर्रे, बहेड़ा, कसैली, पांच रुपया, हल्दी चावल

ओड़ाः जुड़ि ओड़ाः मेनते एंगा जुड़ि एंगा मेनते आपु जुड़ि आपु मेनते।।	घर की जोड़ी घर माँ की जोड़ी माँ बाप की जोड़ी बाप।।
हागा जुड़ि हागा मेनते कुपुल जुड़ि कुपुल मेनते आकिनोः जुड़ि, आबुओः जुड़ि कोतेम लेलेआ एनतेगे जुड़ि। उलि किरिआलिङ किरिआकाना सासाङ सुतामलिङ तोलाकाना ने नेएग आउरि पारोमोः जाकेद ने आड़ान्दि आउरि सांगोमोः जाकेद।।	भाई की जोड़ी भाई कुटुम्ब की जोड़ी कुटुम्ब उसकी भी जोड़ी, हमारी भी जोड़ी जिधर देखो जोड़ी ही जोड़ी। हम आम की कसम खाए हुए हैं हम हल्दी का धागा बांधे हुए हैं जब तक यह नेग समाप्त नहीं होता जब तक यह विवाह सम्पन्न नहीं होता।।
माण्डि उतु कालिङ जोओमा बासि दाः कालिङ नूइआ कालिङ दुब हापेआकानोःआ कालिङ दुडुम हापेआकानोःआ।।	हम खाना नहीं खाएंगे हम पानी नहीं पीएंगे हम चुप नहीं रहेंगे हम सोए नहीं रहेंगे।।
जोआर! जोआर! जोआर!(बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

कोनेआ उडुङ — कन्या को बाहर ले आना

(कोनेआ माण्डोआरेः डुङओःताना। दाः हिपिरचि। बा बापादाला। कुड़िहोन कोड़ाहोन जोम साःरे दुबोःताना। कोनेआः एंगा–आपुकिङ बा दोड़ोम नांगेन बाकिङ ओमोःताना।)	(कन्या मण्डप में लायी जाती है। पानी छिड़ककर परस्पर स्वागत। माला आदान–प्रदान। कन्या वर की बाईं ओर बैठायी जाती है। कन्या के माता–पिता को पुश्पांजलि के लिए फूल दिए जाते हैं।)
हे सिरमारेन सिङबोंगा ओतेरेन ओते एंगा	हे स्वर्ग के परमेश्वर पृथ्वी की धरती माँ

एन हुलाङ एन दिपलाङ
हागा तालारे, कुपुल जापाःरे
उलिदाःते, बेःदाःते
ने मोचा जागारते।
जीदान जुड़िलिङ ओमामेआ
होनकुड़िलिङ जिमामेआ
मेनतेलिङ हारातिङाकाना
मेनतेलिङ हुमानिङाकाना।।

उस समय, उस दिन
भाइयों के बीच, कुटुम्बों के बीच
लार पानी से, जीभ पानी से
इस मुँह की जुबान से।
जीवन–जोड़ी देंगे–ऐसा कहकर
अपनी बेटी सौंपेगे–ऐसा कहकर
भाइयों, हम हारे हुए हैं
भाइयो, हम हीन हुए हैं।।

एना मेन्ते तिसिङदो
एना नांगेन तिसिङदो
मोड़ेहागा सोंगे रे
कुपुलगंगा साते रे।
काजि ओमलेन एन होड़ो
जबान चेदलेन एन परजा
तेबागाकानाएः माण्डोआ ताला
सेटेराकानाएः जामाड़ा लातार।।

इसलिए आज तो
अतएव आज तो
पाँच भाइयों के संग
कुटुम्ब–बंधुओं के साथ।
बात दिया हुआ वह आदमी
जबान दिया हुआ वह प्रजा
पहुँचा हुआ है मण्डप के बीच
आया हुआ है, छादन के नीचे।।

हेला ने नावा सेपेड़ेद दो
हेला ने नावा होड़ो दो
होड़ोको आगुकेआते हिजुःआकाना
परजाको आगुकेआते सेटेराकाना।
बाबा एंगा, कोदे एंगा
उरिः एंगा, मेरोम एंगा
सोबेनेः इदिकोआचि
जोतोएः सुतुःकोआचि।।

भाइयो, यह नौजवान
भाइयो, यह नया आदमी
भाइयों को लेकर आया हुआ है
प्रजा को लेकर पहुँचा हुआ है।
धान माँ, मडुआ माँ
गौ माता, बकरी माँ
क्या वह सबको ले आएगा?
क्या वह सबको अगवाएगा?

बोरो चि बोरसा चि
कुम्बुडु चि जुम्बुड़ि चि
मेनते काबु उडुःइया
मेनते काबु ओनमानेआ।
हातु जुड़ि हातु मेनते

भय की बात, या भरोसे की बात
चोरी की बात, या लोभ की बात
ऐसा हम न सोचें
ऐसा हम न विचारें।
गाँव की जोड़ी गाँव

नेएगे आउरि पारोमो:ते नेएगे आउरि सांगोमो:ते।।	नेग जब तक पार नहीं होता अनुष्ठान जब तक सम्पन्न नहीं होता।।
मांडिओ कालिङ जोमेआ दा:ओ कालिङ नूइआ कालिङ दुब हापेना कालिङ दुडुम हापेना।।	हम खाना नहीं नहीं खाएंगे हम पानी नहीं पिएंगे हम थीर नहीं रहेंगे हम सोए नहीं रहेंगे।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

बोओरा: कानाजि	**वर का कथन**
(बोओरा: कानाजि कोनेआ नांगेन। चिना: मेनते हिजु:आकाना मेनेआ:। बोओर बाए: ओमो: ताना।)	(वर का कथन कन्या के लिए। वह क्यों आया है उसका खुलासा। वर को पुष्पांजलि के लिए फूल दिया जाता है।)
आञ दो .... हातुरेनि: इसु सांगिन दिसुम रेनि: एंगा किरिआ जोम केआते उलि साकि जोम केआते। मोड़े हागा आगुकेआते कुपुल गंगा गारकाकेआते सिङबोंगा गोआरिकि:आते बुरु बोंगा जोआरकि:आते।।	मैं हूँ ...., गाँव का बहुत दूर देष का माँ की कसम खाकर आम को साक्षी बनाकर। पाँच भाइयों को लेकर कुटुम्ब–बंधुओं को साथ कर परमेष्वर को गुहार कर पहाड़ी देवता को जोहार कर।।
दांडा दुताभ, सेन होरा कुपुल कुलि–कुलिकेआते तेबा:तादाञ आपे ओड़ा: सेटेराकानाञ आपे राचा। सामामोचा सामा लाइ:	खोज–खबर चलने के रास्ते कुटुम्बों के पूछते–पूछते मैं पहुँचा हूँ आपके घर मैं आया हूँ आपके आँगन। खाली मुँह, खाली पेट

बुरु बोंगा, इकिर बोंगा	पहाड़ी देव, दह देव
नागे एरा, बिन्दि एरा।	नाग देवी, बिन्दी देवी।
चांडि एरा, जायार एरा	चण्डी देवी, जाहेर देवी
सीमानरेन सीमान बोंगाको	सीमान के सीमा देवता
हातुरेन हातु बोंगाको	गाँव के ग्राम देवता
ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको।।	घर के गृह देवता।।
आलिङदो नो कुड़िहोनाः	हम इस लड़की के
जोनोम एंगा, जोनोम आपु	जन्मदाता माँ–बाप
तिसिङ आपेआः उम्बुलरे	आज तुम्हारी छाया में
सामा मोचा सामा लाइः।	खाली मुँह, भूखे पेट।
मोड़े हागा तालारे	पाँच भाइयों के बीच
कुपुल–गंगा जापाःरे	कुटुम्ब–बंधुओं के समक्ष
जोआरतानालिङ	जोहार करते हैं
गोआरितानालिङ।।	गुहार करते हैं।।
आलिङाः कुड़िहोन	हमारी बेटी का
जीदान जुड़ि, जीदान सोंगे	जीवन जोड़ी, जीवन संगी
.... बाबू माण्डोआ ताला	.... बाबू मण्डप के बीच
तेबाःआकानाएः, सेटेराकानाएः।	पहूँचा हुआ है, आया हुआ है।
आलिङदो एंगा–आपुकिङ	हम तो माँ–बाप
गाराआकानालिङ, गेराआकानालिङ	ग्रहित हैं, ग्रसित हैं
सिंगि लेका, चाण्डुः लेका	सूरज की तरह, चाँद की तरह
तोलाकानालिङ लुमाम लेका।।	बंधे हैं, रेशम की तरह।।
आपेगे मोड़े हागाते	तुम ही पाँच भाई मिलकर
आपेगे कुपुल गंगाते	तुम ही कुटुम्ब–बंधु मिलकर
तिः पारोमतालिङ एनाङ	हमें पार कर सकोगे
चुलु राकाबतालिङ एनाङ।	हमारा उद्धार कर सकोगे।
उडुः केटेःआकादालिङ	हमने निश्चय कर लिया है
मोने ठानाओआकादालिङ	हमने मनमें ठान लिया है

कोनेआः काजि रुनुआड़ा	कन्या का प्रत्युत्तर
(कोनेआ बाएः ओमोःताना)	(कन्या को फूल दिया जाता है)
सारतेगे आमाः काजिदो	सचमुच तुम्हारी बात
सारतेगे आमाः जागारदो	सत्य ही तुम्हारा कथन
जुलतान सेंगेल एड़ेगोःलेका	धधकती आग बुझने जैसा
लोओतान जी राड़ेगोःलेका।	जलता जी ठंढाने जैसा।
टोओरजानाम, आटाकारजानाम	लगता है, मालूम है
जीदान जुड़िम दांड़ाताना	जीवन–जोड़ी खोज रहे हो
सोंगे सोंगोति, कुलगिआ पान्ति	साथी–संगी अपने साथ
आञ इदिम हिजुःआकाना।।	मुझे लेने आए हो।।
मेनदो जोनोम एंगाः कोयोङाते	किन्तु जन्म दाता की गोद से
कोरोम आपुआः उम्बुलाते	कर्म पिता के प्यार से
बुरु बोंगा, इकिर बोंगाआते	पहाड़ी देव, जल देव के बीच से
पिड़ि–कुटुंडि, बिर–बुरुआते।	मैदान, वन पहाड़ से।
डांड़िदाः, सुद दागाते	डाड़ी से, स्रोत से
सोंगेको, गातिकोआते	संगियों से, साथियों से
हिगाड़ाउतारजाःञाम,	मुझे बिलकुल अलग कर रहे हो
पारका उतारजाःञाम।।	मुझे बिलकुल विलग कर रहे हो।।
एना जीरेञ दुकुताना	इसका मुझे मन में दुख है
कुड़ाम बितारेञ इआमताना	इसका मुझे हृदय में षोक है
नेआ चिलकाम सोतोगेआ	इसे कैसे बांधोगे
नेआ चिलकाम सांगोमेआ।।	इसे कैसे संभालोगे।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

रेंगे–तेताङ जीलाः केआते	भूख–प्यास सह कर
तिंगुआकानाञ जुगिलेका	खड़ा हूँ जोगी की तरह
दुबाकानाञ कोंए लेका।।	बैठा हूँ भिखारी की तरह।।
काञ नामताना हाति–सादोम	मैं नहीं खोजता हाथी–घोड़ा
काञ नामताना टाका–सिका	मैं नहीं खोजता रुपया–पैसा
काञ नामताना बाबा–चाउलि	मैं नहीं चाहता धान–चावल
काञ नामताना सोना–रुपा।	मैं नहीं मांगता सोना–चाँदी।
दिसुम जीदान पीटिआते	जीवन–जाहान के बाजार से
कुपुल–गंगा तालाते	कुटुम्ब–बंधुओं के बीच से
आमगे साला नामाकाना	तुम्हीं चुन ली गई हो
आमगे पिति नामाकाना।।	तुम्हीं खोज ली गई हो।।
कुपुल कुलगिआन होराते	पति–पत्नी कहलाने के लिए
जीदान जुड़ि मेनते	जीवन–जोड़ी कहलाने के लिए
मिद किआ सिंदुरि	एक किया सिन्दूर
बार थाड़ी सासाङ।	छो थाली हल्दी।
आम नांगेनगे जोगाओआकाना	तुम्हारे लिए ही ,रखा है
आम नांगेनगे जोतोनाकाना	तुम्हारे लिए ही जुगाया है
आंचोंड़ो रे ने तेलाएःमे	उसे तुम आंचल में स्वीकारो
पाएला रे ने पोटोमेमे।।	उसे तुम पल्लू में बांधो।।
मोलोङ पेरेःञ टिकातामा	आओ माथे पर टीका भर दूँ
जोआ पेरेःञ गोसोःतामा	आओ, गालों पर उसे मल दूँ
मोड़ेहागा, कुपुल गंगा	पाँच भाई, कुटुम्ब–बंधु
काजीकाको जी बितारते।।	साक्षी बनें सब मिलकर।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

तिसिङ ताला पिड़िरे
ने उलि सुबा रे
बागे जादलेआम, बाबु
राड़ाजाद लेआम बेटा।
चिकानाःम हांडाजानाःतेचि
चिकानाःले गुनाकेदाःतेचि–
मेनतेको कुलिञताना
मेनतेको मेताञताना।।

आज बीच मैदान में
इस आम के तले
बाबू तुम हमें छोड़ जा रहे हो
बेटे, तुम हमें तोड़ जा रहे हो।
क्या हमने तुम्हें नाराज किया?
क्या हमने कोई गुनाह किया?
इस तरह मुझसे पूछने लगे
इस तरह मुझसे कहने लगे।।

काञ बागेजादपेआ, गा
काञ राड़ाजादपेआ, गा
मोंडे हागा इदिकेकोआते
कुपुल गंगा गारकाकेकोआते।
आपे जोगाओ–जोतोननिः
आपे सुसार–बासारनिः
गातिञ गाति आउलीआ
सोंगोतिञ सुतुः आउलीआ।।

माताओ, मैं तुम्हें नहीं छोड़ रहा
माताओ, मैं तुम्हें नहीं त्याग रहा
पाँच भाइयों को लेकर
कुटुम्ब–बंधुओं के साथ कर।
तुम्हारी सेवा करने वाली
तुम्हारी सुश्रुसा करने वाली
अपनी संगिनी को लाने जा रहा हूँ
अपनी साथिन को लाने जा रहा हूँ।।

मेनतेञ काजिआकादकोआ
मेनतेञ बाकांड़ाकादकोआ
होसोड़ो काञ जागारताना
चाकाद काञ बाकांड़ाताना।
नाआः दोले टोओरकेःमा
निमताङले मुण्डिकेःमा
जीदान जूड़िम नामाना
गाति–सोंगोतिम पिचाआना।।

इस तरह उन्हें कह दिया है
इस तरह उन्हें वचन दिया है
मैं असत्य नहीं कह रहा
मैं तुम्हें छका नहीं रहा।
अब हमें पता चला
अब हमें मालूम हुआ
तुमने जीवन–जोड़ी पा ली है
तुमने साथी–संगिनी देख ली है।।

ओड़ाः बदला, हातु बदला
एंगा बदला, आपु बदला
नामानाम दिसुम बदला
बागेजादलेआम जोतोन बदला।

घर के बदले, गाँव के बदले
मँ के बदले, बा पके बदले
तुमने पा लिया है देश के बदले
छोड़ रहे हो हमें जतन के बदले।

बोओराः जागार रुनुआड़ा

(बोओर बाएः ओमोःताना)

आमाः उड़ुः बुगिनगेआ
आमाः जागार सारतेगेआ
मेनदो काजि आयुमलेम
जागार ताञ सुआड़ालेम।
.... हातु एआङको
लुमाम लेकान साकिङबुड़िको
मायाङो लिङुजाना ताको
काटाओ पेटेःजाना ताको।।

हिद पाण्डुजानाको
रुता पाण्डुजानाको
आपिआ बोओःजानाको
आपिआ काटाजानाको।
हिजुःतान इमताङरे
सेन एटेः दिपिलारे
कुलिकेटेः किःञाको
जागार बापाद किःञाको।।

ओड़ाः—दुआर बागे केआते
एंगा हातार राड़ाकेआते
ओकोते बाबुम सेनोःताना
चिमाएते बेटाम बिरिदताना।
मोद बालेः बालेःआते
मोद लिंडुङ लिंडुङाते
हाराकेद मेआले बाबु
माताकेद मेआते बेटा।।

वर का प्रत्युत्तर

(वर को फूल दिया जाता है)

तुम्हारा सोचना ठीक ही है
तुम्हारा कहना ठीक ही है
किन्तु मेरी बात सून लो
कथन का श्रवण करो।
.... गाँव की माताएँ
रेशम—सी दादियाँ
उनकी कमर झुक गई हैं
उनके पैर मुरक गये हैं।।

पेशार की तरह बाल पक गये
शीशम की तरह बाल पंडरा गए
तीन सिरों वाले हो गये
तीन पैरों वाले हो गये।
घर से निकलते समय
घर से चलते समय
उन्होंने मुझसे पूछा था
उन्होंने मुझसे कहा था।।

घर—द्वार छोड़कर
माता का बंधन तोड़कर
बाबू तुम कहाँ जा रहे हो
बेटे तुम कहाँ जा रहे हो।
जब से तुम बालक थे
जब से तुम छोटे थे
हमने तुम्हें बड़ा किया
हमने तुम्हें जवान किया।।

हातु जुड़ि हातुञ नामामताना	गाँव के बदले गाँव दिला रहा हूँ
एंगा जुड़ि एंगाञ होपोरामताना	माँ के बदले माँ दिला रहा हूँ
आपु जुड़ि आपुञ तिंगुआमताना	पिता के बदले पिता खड़ा कर रहा हूँ
कुपुल जुड़ि कुपुलेञ दुबामताना।	कुटुम्ब के बदले कुटुम्ब बैठा रहा हूँ।
एला लेंगा तीरे हिजुःमें	आओ मेरी बायीं ओर बैठो
सार सुपिद लेनेमे	जूड़े में तीर बांधो
कापि पाटे जापाःएमे	कमर में फरसा छांदो
जीदान होरा आञलोः सेनेमे।।	मेरे संग चलो जीवन के रास्ते में।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

कोनेआः हानाटि	कन्या की हठ
(कोनोआ बाएः ओमोःताना)	(कन्या के हाथ में फूल दिया जाता है।)
आहो, आमाः काजि चीनी मिसिरि	प्रिय तुम्हारी बात चीनी, मिसरी सी
गुडूआनगे, गोतोमानगे	गुड़ की तरह, घी की तरह
जीताञ गेओल–गेओलताना	मन में गुदगुदी होती है
कोते हेड़ेम, कोते हाड़ादताना।	किधर मीठी, किधर खट्टी।
ओड़ाः दुआर सम्बाड़ाओ मेनते	घर–द्वार संभालने के लिए
हातु–दिसुम टेकाओ मेनते	गाँव–देष टिकाने के लिए
जिनगानी सुगाड़ाओः मेनते	सुन्दर जीवन के लिए
लांदा–रासिका ताइन मेनते।।	हँसी–खुषी जीने के लिए।।
ताइनो इतु, सेनो जुगुतु	रहना–चलना सीखना होगा
दुब–तिंगुनो इतुले एनाङ	बैठना–उठनाा सीखना होगा
जागार–जापागारो इतुले एनाङ	बोलना–बतियाना सीखना होगा
कामि–उदामो मुण्डिले एनाङ।	काम– उद्यम सीखना होगा।
जी बितारातेञ जागारामताना	जी के भीतर से बोल रहा हूँ
जुदि आञाः काजिम मानातिङताना	यदि मेरी बात मानोगे
तोबे रेदोञ सेना आमलोः	मैं तुम्हारे साथ चलूँगी
कारेदो काञाःताना।।	नही तो तुम्हारे साथ नहीं चलती।।

मेनतेको काजिआञताना
मेनतेको बाकांड़ाञताना
इआमतानाको, गेराङतानाको
नुरानतानाको, ताबागेनतानाको।।

इस तरह लोग कहने लगे
इस तरह लोग बोलने लगे
रोने लगे, सिसकने लगे
कलपने लगे, बिलखने लगे।।

सेंगेल बोंगा सानामाङरे
हागा कुपुल तालारे
एंगा किरिआञ जोमजादा
उलि किरिआञ नाबजादा।
बाले: सिंगि तुरतानलो
आपेआ: नावा किमिनलो:
मोड़े हागा–कुपुललो:
गाजा–बाजा बाजुडिंआलो:।।

अग्नि देवता के सामने
कुटुम्ब बंधु के बीच
माँ की कसम खाता हूँ
आम की कसम खाता हूँ।
कल सूर्य उगने तक तुम्हारी
नई बहू के साथ
पाँच भाइयों के साथ
गाजे–बाजे के साथ।।

लेल दारोमपे, चिना दारोमपे
चो: तेआ:को, चुमान तेआ:को
सोतो: ताड़ाएपे, सांगोम ताड़ाएपे
तेआराकानो:पे साम्पोड़ोआकानो:पे।
जुदि काञ ति:आउकीरे
जुदि काञ सुतु: आउकीरे
हातु सीमान काञ चापादेआ
ओड़ा: दुआर काञ बोलोआ।।

यदि मैं नहीं आया
यदि साथ नहीं लाया
गाँव की सीमा में पैर नहीं रखूँगा
घर के दरवाजे में प्रवेष नहीं करुँगा।।
तुम हमारी राह देखना, पहचान रखना
चुमावन की सामग्री, स्वागत के सामान
जुटाते रहना, संजोते रहना
तैयार रहना, संपरे रहना।।

मेनतेञ काजिआकादकोआ
मेनतेञ बाकांड़ाआकादकोआ
मोड़े हागा ताला रे
कुपुल गंगा जापा:रे।
दिआ सेंगेल सामाङरे
सारजोम दारु सुबारे
काञ हिड़िजादमेआ गा
काञ हिगाड़ाजादमेआ गा।।

इस तरह मैंने कह दिया है
इस तरह मैंने बोल दिया है
पाँच भाइयों के बीच
कुटुम्ब बंधुओं के बीच।
दीप–अग्नि के समक्ष
शालवृक्ष के तले
मैं तुम्हें ठग नहीं रहा हूँ
मैं तुम्हें अलगा नहीं रहा हूँ।।

जी बितारेरे ताम्बारुबजाना।	मन के भीतर तक चला गया।
पिड़ि–कुटुंड़ि कामि उदामते	काम–उद्यम के बाद
ओड़ाः–राचाञ रुआड़ाकोःरे	घर–आंगन वापस आने पर
लान्दा दारोम, जागार दारोमिञमे	हँसकर–बतियाकर मेरा स्वागत करना
लोटा दाः ओम दारोमिञमे।।	लोटा–पानी से मेरा स्वागत करना।।
आमाःगे ओड़ाः–दुआर	तुम्हारे ही घर–द्वार
आमाःगे तुकु–डिंकि	तुम्हारे ही मूसल–ढेंकी
आमाःगे चाटु–लुण्डिः	तुम्हारे ही हांड़ी–बर्तन
आमाःगे बोंगा–बुरु।	तुम्हारे ही देवी देवता।
एआङ ताको आबा ताको	माताओं की, पिताओं की
सुसारकोम, जोतोनकोम	तुम सुश्रुशा, जतन कराना
कुपुलनिः, कुटुमनिः	कुटुम्ब जो आएं, बंधु जो आएं
हागानिः, बोयानिः।।	भाई जो आएं, बिरादर जो आएं।।
बिलाकोम पाटि पारकोम	उन्हें चटाई–खाट बिछा देना
चुना–तामाकु ओमाकोम	उन्हें चुना–तमाखू देना
लोलोदाः, बासिदाः	गरम पानी, बासी पानी
ओम दारोम, तिल दारोमकोम।	देकर, बाँट कर स्वागत करना।
आञ बेगार कुलि किञाते	मुझे पूछे बिना
पीटि–पीड़ि, बुरु–पिड़ि	बाजार–मैदान, मेला–ठेला
सुसुन आकाड़ा जारुओड़ाः	नाच अखरा, मिलने–जुलने
कुपुलोः आलोम सेनोः हापेना।।	मेहमानी, चुपके से न जाना।।
रिंडिकाड़ि आलोम आउआ	ऋण–उधार न लेना
एटाः दुआराते आलोम आउआ	दूसरे के घर से न लेना
जेता सोंकोटो टोगोःरेदो	कोई संकट आने पर
बारानकिंतेलाङ लेल दारोमेआ।	दोनों मिलकर करेंगे सामना।
एला हिजुःमे लेंगातीरे	आओ बैठो मेरी बाई ओर
उयुःनालाङ एंगा काटारे	झुकें हम माता के चरणों पर

तिः बिरिदतालांकाएः कोयोङरे	वह हमें गोदी में उठाए
चुलुतालाङकाए जीदान जांगिरे।।	जीवन की सीढ़ी पर हमें चढ़ाए।।

जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

कोनेआ-बोओर बारानाकिंआः गोआरि	**कन्या-वर दोनों की प्रार्थना**

(कुड़िहोन बोओराः लेंगा तीरे, होपोरताना। बारानकिङ जोमती तिपिरिङ केआतेकिङ गोआरिताना (बाकिङ ओमोःताना।)	(कन्या वर की बाई ओर आती है। दोनों हाथ एक दूसरे के ऊपर किए हुए प्रार्थना करते हैं। उन्हें फूल दिया जाता है।)

हे सिरमारेन सिङबोंगा	हे स्वर्ग के परमेश्वर
ओतेरेन ओतेएंगा	पृथ्वी की धरती माँ
.... हातु सिमान	.... गाँव की सीमा के
बुरु बोंगा इकिर बोंगा।	पहाड़ी देवता, जल देवता।
मांडा बुरु, देसाउलि	माड़ा पहाड़, देसाउलि देव
चांडि एरा, नागे एरा	चण्डी देवी, नाग देवी
बा जायार, जिलु जायार	सरहुल जाहेर, शिकार जाहेर
तोराकोड़ा चोंड़ेया कोड़ा।।	तोरो छोकड़ा, चरवाहा छोरा।।

तिसिङ आपेआः उम्बुलरे	आज तुम्हारी छाया में
दिआ सेंगेल सामाङरे	दीप अग्नि के समक्ष
मोड़े हागा ताला रे	पाँच भाइयों के बीच
कुपुल गंगा जापाःरे।	कुटुम्ब-बंधुओं के पास।
जोआरतातालिङ, गोआरितानालिङ	हम जोहार करते हैं, गुहार करते हैं
जुड़िरेलिङ दुबाकाना	जोड़ी में बैठे हैं
पांति रेलिङ जारुआकाना	पंक्ति में बैठे हैं
जुड़िन नांगेन, जोतोन नांगेन।।	जुड़ने के लिए, जुतने के लिए।।

जुदिम बालू:रे, जुदिम बुलो:रे	यदि तुम पागल हुए, शराबी हुए
सिउ–चालु कामा:रे	जोतने–कोड़ने में मन नहीं लगाओगे
कामि–उदाम कामा:रे	काम–उद्यम से भागोगे
जोजोम बारिम नानामरे।	सिर्फ खाने को चाहोगे।
काजि हुड़िङ ओंड़ाजानरे	बात थोड़ी बिगड़ने पर
कामि बातिरि तांड़ाजानरे	काम कोई खराब होने पर
साएमेद, कोरसेल मेदिञरे	टेढ़ी नजर, कड़ी नजर
रेः राआड़, हाड़ाद मोचाञरे।।	गली गलौज करोगे।।
तेगाञरेम, चापादिञ रेम	ठोकर मारोगे, रौंदोगे
पादाञरेम, पासाकाञरेम	पैर चलाओगे, लात मारोगे
डाण्डा:ञरेम, रूञरेम।	डंडा चलाओगे, सोंटा मारोगे
आञ बेगार कुलिकिआते	मुझे मारोगे, पीटोगे।
पीटि बुरूम सेनो:रे	मुझे बिना बताए
तालानिदा, आदिङ निदा	बाजार–मेला जाओगे
खोदोड़ो–खेंदोड़ोम	आधी रात, अंधेरी रात
काजिआञरे।।	मुझसे बक–झक करोगे।।
हिरुमिञरेम, गोड़ोमिञरेम	मुझे सौतन, सहपत्नी बनाओगे
काञ सेना आमाः लेंगा ती	मैं तुम्हारी बाईं ओर नहीं जाऊँगी।
एनका रेदो जू रूआड़ामे	उस तरह रहोगे तो जाओ वापस जाओ
हिजु:लेन होरा साबेमे।।	जिधर से आए हो, वही रास्ता पकड़ो।।
जोआर! जोआर! जोरआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

बोओराः काजि रूनुआड़ा — वर की पुनरुक्ति

(बोओर बाएः ओमो:ताना)	(वर के हाथ में फूल)
ओहो, आमाः काजि कांडा सारलेका	प्रिय, तुम्हारा कहना तीखा तीर
ईम सुरुदरेञ तुञ जाना	सीधे ह्रदय में ही जा लगा
इकिर रे दिरि तेरकेदलेका	दह में पत्थर फेंकने की तरह

काजि लिङ तोलकेदा	बात हमने तय की
जागारलिङ रोओदकेदा	वचन हमने बांधा
मोदमुलि सेनेरेआः	एक दिषा में चलने को
मोदमुलि चाण्डाङेरेआः।	एक दिषा में बढ़ने को।
जोआराइतानालिङ जोनोमएंगा	जन्मदातृ माता को हम जोहार करते हैं
नामेकालिङ आएआः देंगा	हमें उसका प्रोत्साहन मिले
मिआद आंचोड़ोरे उम्बुलेनरेआः	अपने आँचल की छाया में रहने का
पेड़ेएः हाटिङतालिङका।।	बल वह हमें बाँट दे।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

एंगाआः गोआरि / माँ की प्रार्थना

(कोनेआ–बोओरकिनाः ती तिपिरिङ। तारामुण्डि आदोआ सुताम तोलबिउरोःताना। तारा मुण्डि एंगाआः तीरे। एंगाआः तीरे बा ओमोःताना।)	(कन्या वर के हाथ एक दूसरे के ऊपर धागे की एक छोर से दोनों हाथ बांधे जाते हैं दूसरा छोर माँ के हाथ में। माँ के हाथ में फूल दिया जाता है।)

हे सिरमारेन सिङबोंगा	हे स्वर्ग के परमेश्वर
ओतेरेन ओतेएंगा	पृथ्वी की धरती माँ
.... हातु सिमान	.... गाँव की सीमा के
बुरु बोंगा इकिर बोंगा।	पहाड़ी देवता, जल देवता।।
मांडा बुरु, देसाउलि	मांडा पर्वत, देसाउलि देव
चांडि एरा, नागे एरा	चण्डी देवी, नागिन देवी
बा जायार, जिलु जायार	सरहुल जाहेर, षिकार जाहेर
तोराकोड़ा चोंड़ेया कोड़ा।।	तोरो कोड़ा, चरवाहा छोरा।।

तिसिङ आपेआः उम्बुलरे	आज तुम्हारी छाया में
दिआ सेंगेल सामाङरे	दीप–अग्नि के समक्ष
मोड़े हागा ताला रे	पाँच भाइयों के बीच

कुपुल गंगा जापाःरे।	कुटुम्ब–बंधुओं के पास।
सामा मोचा, सामा लाइः	खाली मुँह, खाली पेट
जोआरतानाञ, गोआरितानाञ	हम जोहार करते हैं, गुहार करते हैं
जोआरताञाः तेलालेपे	हमारा जोहार स्वीकार करो
गोआरिताञाः आतेनलेपे।।	हमारी गुहार पर ध्यान दो।।
सिदा दो आञाः हातारे	पहले तो हमारी गोद में
मिआद कुड़िहोनबु लेलाना	एक लड़की तुम देखते थे
तिसिङदो सेनदुताम हागाको	आज भाइयों की खोज से
तिसिङदो सेन दाराड़ा कुपुलको।	आज कुटुम्बों की खबर से।
आपेआः पोरताबते, आपेआः देंगाते	तुम्हारे प्रताप, तुम्हारे सहयोग से
आञाः ओचोंड़ोरे, आञाः हातारे	मेरे आँचल में, मेरे पल्लू में
मिआद कोड़ाहोन, मिआद कुड़िहोन	एक लड़का, एक लड़की
पान्तिरेकिन दुब जारुआकाना।।	पंक्ति में बैठे हैं, जोड़ी में विराजे हैं।।
हाराजानाकिन, माताजानकिन	ये बढ़े, ये पले
जीदान जुड़िनरेआः	जीवन भर जुड़े रहने को
गाति–सोंगोति पांतिनरेआ	इन्होंने बात पक्की की
काजिकिनगोटाकेदा, बाकांड़ाकिन रेओदकेदा।	इन्होंने वचन तय किया है।
आञाः आंचोड़ोते, आदोआ सुतामते	मेरे आँचल से, कच्चे धागे से
बाबालेकाकिन बंदिनजाना	धान की तरह बंध गये
लुमाम लेकाकिन तोलेनजाना	रेशम की तरह छंद गये
मोयोद जी कुड़ामेनजाना।।	एक मन–प्राण हो गये।।
मार ताबु हागा कुपुलको	आओ हे कुटुम्ब बंधुओ
आपेआः पेड़ेःगे, आपेआः बोरसागे	तुम्हारा ही बल, तुम्हारा ही भरोसा
ने कोड़ाहोन–कुड़िहोन ताबु	इस लड़के, इस लड़की को
तिःराकाब, चुलुराकाबताकिनाबु।।	हम पकड़ कर खड़ा करें, प्रोत्साहन दें।।
जोआर! जोआर! जोआर! (बा दोड़ोम)	जोहार! जोहार! जोहार! (पुष्प दान)

सिंदुरि राकाब

(बारान साःरेआः सिंदुरि होपोराकाना। कोनेआ बोओरकिन दुब–दापारोमाकाना। कोड़ाहोनः सिंदुरि कोड़ाहोनसाः आर कुड़िहोनाः सिंदुरि कोड़ाहोनसाः हिसाओःताना। तालारे मिआद सारजोम साकाम दोआकाना। एनरे बारानसाः रेआः सिंदुरि चुउड़ुङोताना। कोड़ाहोन मेनजादा)

निमिन माराङ रिम्बिल लातार
जिलिङ–चाकार ओतेचेतान
चिमिन होञ कुलिकेना
चिमिन होञ कुदुमकेना।
जी होन मोद चोकोएःलेकान
हासा होड़ोमो हुड़िङ लेकान
आहो आमरेगे जापाःजाना
आहो, आमरेगे जुड़ाःजाना।।

मिद किआ सिंदुरि
बार थाड़ सासाङ
आम नांगेनगेञ जोगाओलेदा
आम नांगेनगेञ जोतोनलेदा।
तिसिङ दो होड़ोमो सोबेन
तिसिङ जे मेनाः सोबेन
आमगेञ ओमामताना
आमगेञ जिमामताना।।

(कोड़ाहोन कुड़िहोनके मोलोङरे आपिसाःएः टिकाजाःइआ। एन

सिंदूर दान

(दोनों तरफ का सिंदूर पास ही रखा हुआ है। वर और कन्या एक–दूसरे के सामने बैठे हुए हैं। वर पक्ष का सिंदूर कन्या की तरफ और कन्या पक्ष का सिन्दूर वर की ओर खिसकाया जाता है। उसमें दोनों तरफ का सिन्दूर उंडेला जाता है। वर की उक्ति–)

इतने विस्तृत आसमान के नीचे
लम्बी–चौड़ी धरती के ऊपर
मैं कितना पूछता फिरा
मैं कितना जाँचता फिरा।
मेरा छोटा सा–मन
मेरा छोटा–सा षरीर
तुम्हीं से जा लगा
तुम्हीं से जा मिला।।

एक किया सिंदूर
दो थाली हल्दी
मैंने तुम्हारे लिए जुगाया था
मैंने तुम्हारे लिए संजोया था।
आज अपना मन–प्राण सर्वस्व
आज जो भी मेरा है
मैं तुम्हें सौंपता हूँ
मैं तुम्हारे आगे करता हूँ।।

(वर कन्या के मस्तक पर तीन बार टीका लगाता है। उस समय टीका

सोमाए टिकाइ पिचिद दुबाकान हागा कुपुलको सिङबोंगा गोआरि हो गोआरि मेनते आपिसाको काजिजादा। एन आयोमते कुड़िहोनोः कोड़ाहोनके एना काजिः काजिआइताना आर आपिसा मोलोङरे टिकाजाःइआ। हागा कुपुलको सिङबोंगा गोआरि हो गोआरि मेनते आपिसाको काजिजादा। कोनेआ–बोओरकिनाः किचिरि आचोंड़ोकिन टोंडोमोः ताना। मेंड़ेदसाकाम/रुपाबेरा बापादालाओःताना।)

बाबाआता गुम-सेनबिउर

(कोनेआ हाटाः साबकेआतेः तिंगुआकानाा। तायोमरे बोओर तिंगुआकाना। कोनेआः हुड़िङ हागाते कोनेआके आताएः चुगाइताना। बोओर–कोनेआ गुम जालोः जोमसाःआते माण्डोआकिन सेन बिउरजादा। मिसा पुराओकेचि कोनेआ रिद–दिरि चेतानरे आपिताः चुः आकान चाउलि–पैला–बाएः कुंडुसु उयुःजादा। नेआ कामि आपिसा रिकाओःताना। एन तायोमते कोनेआ बोओरकिन आपान–आपान टायाद रेकिन दुब रुड़ाताना। हागा–कुपुल कोरे आदोआ चाउलि हाटिङोःताना। बुगिन सानाङ।)

हे सिरमारेन सिङबोंगा
ओतेरेन ओतेएंगा

लगाने के साथ ही सारे लोग एक साथ सिंबोंगा गोहारि हो गाहारि तीन बार उच्चरित करते हैं। इसके बाद कन्या के उपयुर्क्त मंत्रोच्चार के साथ वर को तीन बार टीका लगाती है। कुटुम्ब–बिरादरी के लोग सिंबोंगा गोआरि हो गोआरि एक साथ तीन बार उच्चरित करते हैं। कन्या–वर के वस्त्रों के आंचल बांध दिये जाते हैं। लोहे/चाँदी के कड़े का आपस में आदान प्रदान करते हैं।)

धान लावा फटकना-परिक्रमा

(कन्या सुपली पकड़े खड़ी है। उसके पीछे वर खड़ा है। कन्या का छोटा भाई कन्या के सुपली में लावा गिरा देता है। वर कन्या लावा झारते हुए दाहिने से बाई ओर मण्डप की चारों ओर घूमते हैं। फेरा पूरी करने के बाद कन्या शील–पत्थर पर रखे हुए चावल और पैसे को पैर से गिरा देती है। तीन बार उपर्युक्त कार्य करती है। उसके बाद वर–कन्या अपने–अपने स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं। कुटुम्ब–बंधुओं के बीच अक्षत वितरण किया जाता है। आशीर्वाद)

हे स्वर्ग के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माँ

तोआ लेका तुरोःकिन	दूध से उगने वाले
दाहि लेका हासुरोःकिन।	दही से डूबने वाले।
आबेनगे मुनुरेनकिन	तुम ही आदि के हो
आबेनगे टुण्डुरेनकिन	तुमही अन्त के हो
आबेनगे सुबारेनकिन	तुम ही मूल के हो
आबेनगे चुटिरेनकिन।।	तुम ही चोटी के हो।।
जोनोमाते हानसाःरेनकिन	जन्म के उस पार के हो
गोनोएःआते पारोमरेनकिन	मुत्यु के उस पार के हो
जूगु–जूगु जीदाकानकिन	युगों तक जीवंत
जानाओ–जानाओ ताइआकानकिन।	युगों तक स्थापित।
होयोरे जी ओओमकिन	हवा में प्राण भरने वाले
दाःरे मायोम सीरजाओकिन	पानी में लहू सर्जने वाले
सिरमारे गुयु तूरुबकिन	आकाश में घर बनाने वाले
ओतेरे हिता परचाओकिन।।	धरती पर बीज बोने वाले।।
आले आबेनाः होनको नांगेन	हम बच्चों के लिए
आले आबेनाः गांड़ाको नांगेन	हम संतान के लिए
दाः बितार उकुआकान	पानी के भीतर छिपी हुई धरती
जालाकार बितार दानाङाकान।	जलके अन्दर दबी हुई पृथ्वी।
हाइ दुताम, काड़ाकोम दुताम	मछली को, केकड़े को दूत बनाकर
होरो दुताम, लेण्डाद दुताम	कछुए–केचुए को दूत बनाकर
ओतेबेन बाइकेदा	तुमने धरती का निर्माण किया
धरतीबेन बाड़ुइकेदा।।	तुमने धरती का गठन किया।।
सिंगितुरोः, चाण्डुमुलुः	पूरब दिशा, पश्चिम दिशा
काटा जाम्बाड़ा, बोओः कुंदुड़ि	उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा
आबेनाः कोयोङारे, आबेनाः सिपिङरे	तुम्हारी गोद में तुम्हारे आँचल में
आबेनाःगे सिरजान, आबेनाःगे उपुजान।	तुम्हारा सृजन तुम्हारी उत्पत्ति।
जिलिमिलि ओते	झिलमिल धरती
लिबिलिबि सिरमा	फैला हुआ आंसमान

पाटि लेका बिलाकाना	चटाई की तरह बिछी हुई
डुबा लेका हारुबाकाना।।	कटोरी की तरह औंधा हुई।।
ओतेचेतान टुण्डाङतानिः	जमीन पर रेंगने वाले को
लाता बितार उगुराकानिः	खोह में छिपे हुए को
होयोरे आपिर ओटङतानिः	हवा में उड़ने विचरने वाले को
दाः बितार ओयारतानिः।	पानी में तैरने वाले को।
जोम–नू ओओमकिन	सबको खिलाने–पिलाने वाले
दाः–तासाद हाआटिङकिन	घास–पानी बांटने वाले
ऊम्बुलकिन, चाआतोमकिन	छाया देने वाले, छतरी देने वाले
होओरोकिन, जाआंगिकिनं।।	ओगरने वाले, रखवाली करने वाले।।
तारा निदा, तारा सिंगि	आधा समय दिन, आधा समय रात
सेताः सिंगाड़ा, तिकिन तारासिङ	सुबह–शाम, दोपहर–अपराह्न
कामि सोमाए ताओलकिन	काम का समय बांधने वाले
रुडुन सोमाए ठाआराओकिन।	आराम का समय ठहराने वाले।
सिंगि–चाण्डुः, इपिल रिम्बिल	सूरज–चाँद, तारे–आसमान
रोकोम हिता, रेएद रानु	किस्म–किस्म की जड़ी–बूटियाँ
आनाः–मानाः जो सिबिल	नाना प्रकार क स्वादिष्ट फल
दिरि–दारु तासाद–रुड़ा।।	पत्थर–पेड़, घास–फूस।।
सिरजाओआकादलेआबेन	तुमने हमारे लिए सिरजा
उपुजानाकादलेआबेन	हमारे लिए उत्पन्न किया
सोतोःआकादलेआबेन	सबको सरिया कर रखा है
सांगोमाकादलेआबेन।	सबको संभाल कर रखा है।
बुरु बोंगा, इकिर बोंगा	पहाड़ी देवता, जल देवता
मांड़ा बुरु, देसाउलि	माड़ा देव, देसाउलि देव
नागे एरा, बिंदि एरा	नागिन देवी, बिन्दी देवी
चांडि एरा, जायार एरा।।	चंडी देवी, जाहेर देवी।।
दिसुमरेन दिसुम बोंगाको	देश के देश देवता
सिमानरेन सिमान बोंगाको	सीमा के सीमा देवता

हातुरेन हातु बोंगाको	गाँव के ग्राम देवता
ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको।	घर के गृह देवता।
लुटकुम हाड़ाम, लुटकुम बुड़िआ	लुटकुम बूढ़ा,लुटकुम बुढ़िया
रिसा मुण्डा, मदरा मुण्डा	रिसा मुण्डा, मदरा मुण्डा
बिरसा मुण्डा, गया मुण्डा	बिरसा मुण्डा, गया मुण्डा
सिनगी दाइ, माकि दाइ।।	सिनगी दइ, मकि दइ।।
ओड़ोःगे नुतुम का तेबाःजानको	और भी अनगिनत देवगण
चुण्डुलते का टोःजानको	और भी अचिन्हित देवगण
सोबेनले गोआरिजादपेआ	हम सबको गुहारते हैं
सोबेनले बिनतीजादपेआ।	हम सबके सामने विनत हैं।
तिसिङदो मिद तोआब साउड़िते	आज एक मुट्ठी खेर से
तिसिङदो मिद दुबा मादते	आज एक गुच्छे बाँस से
बारिआ ओड़ाःकिनले दाबजादा	दो घर हम छा रहे हैं
बारिआ रोसोमकिनले तुरुबजादा।।	दो झोपड़ियाँ हम बना रहे हैं।।
ने ओड़ाःकिन ताले	ये घर हमारे
ने रोसोमकिन ताले	ये झोपड़िया हमारी
जाओंगे तिंगुआकानका ताइन	हमेशा खड़ी रहें
जाओगे टेकाओआकानका ताइन।	हमेशा स्थिर रहें।
तिसिङदो मोड़े हागाको ताला	आज पाँच भाइयों के बीच
तिसिङदो कुपुल–गंगाको जापाः	आज कुटुम्बों के समक्ष
ने हापानुम–सेपेड़ेदकिन	इस युवक और युवती को
ने कोनेआ–बोओरकिन।।	इस कन्या और वर को।।
मिद किआ सिंदुरिते	एक चुटकी सिंदूर से
बार थाड़ि सासाङते	दो टुकड़ा हल्दी से
जी कुड़ाम किङ बापादाला जाना	ये दोनो एक मन हो गए
डम मायोम किङ तेपेला जाना ।	ये दोनो एक शरीर हो गए।
तिसिङदो आरांड़ालातार	आज जूए के नीचे
तिसिङदो दिरि चेतान	आज पत्थर के ऊपर

जोड़ाजाद किनाले	हम इन्हें जोड़ते हैं
तिंगुजाद किनाले।।	हम इन्हें बांधते हैं।।
निकिनाः ने तोनोल	इनका यह बंधन
निकिनाः ने सापाब	इनकी यह पकड़
जूगु–जूगु ताइनोःका	युगों तक बना रहे
दिरि लेका थीरोःका।	पत्थर की तरह स्थिर रहे।
तिसिङाते मिआद होरा	आज से एक रास्ता
तिसिङाते मिआद डारे	आज से एक दिशा
निकिन सेन होराएका	ये चलना शरू करें
निकिन सेन डारेएका।।	ये उठना आरंभ करें।।
निकिनाः सेन होरारे	इनके चलने के रास्ते में
निकिनाः सेन डारेरे	इनके निकलने की डगर पर
तोद आलो ताइनका	कोई ठेस न हो
तुगुड़ि आलो ताइनका।	कोई ठोकर न हो।
सान किङ आगुरे	जब ये लकड़ी लाने जाएँ
साकाम किङ हेःरे	जब ये पत्ती चुनने जाएँ
कुला चांकि आलोका ताइन	इन्हें बाघ का डर न रहे
बिङ सोदोर आलोका ताइन।।	इन्हें सांप का भय न रहे।।
दुकुरे, सुकुरे	सुख में, दुःख में
रेंगेःरे राबाङरे	भूख में, प्यास में
मिद जीआकानकाकिन	ये एक प्राण होकर रहें
मिद कुड़ामाकानकाकिन।	ये एक हृदय होकर रहें।
.... आर	.... और ....
सिंगि आर चाण्डुःकिन	सूरज और चाँद की तरह
होयो आर दाःकिन	हवा और पानी की तरह
कुलगिआओःतानाबेन तिसिङ।।	तुम पति–पत्नी बन रहे हो।।
मोनेकेटेः, जी ठानाओ	निश्चय मन से, संकल्प प्राण से

कुरुमुटुं मोलोङ बालबाल
मिसाते कामि उदामबेन
मिसाते दांड़ा दुतामबेन।
दिरि लातार काड़ाकोम
लोसोद बितार हाइहोन
गाड़ारेबेन नामिरे
बान्दारेबेन भेटाइरे।।

परिश्रम करो, पसीना बहाओ
तुम एक साथ काम–उद्यम करो
तुम एक साथ कमाओ–खाओ।
पत्थर के नीचे केकड़ा
कादो के भीतर मछली
नदी में पाओ यदि
बांध में मिले यदि।।

मिद होड़ो बोओ:सा:
मिद होड़ो चादलोमसा:
मिसाते साबीबेन
मिसाते ओताइबेन।
मिआदपाटि, मिआद पारकोमरे
मिआद गाण्डु, मिआद चाल्पा:रे
दुबबेन, जारुबेन
लापान्दाबेन, जापागारबेन।।

तुम में से एक सिर की तरफ
तुम में से एक पूंछ की तरफ
तुम उसे एक साथ पकड़ो
तुम उसे एक साथ धरो।
एक चटाई, एक खाट पर
एक पीढ़ा, एक तखते पर
तुम साथ बैठो, बतियाओ
तुम परस्पर हँसो–बोलो।।

बुरु पिड़ि, पीटि पिड़ि
मिसाते सेनो:–हिजु:बेन
मिसाते किरिङ–आकिरिङबेन
मिसाते गो: गोनोङबेन।
मिद तेबेन सेनाकानरे
मिद तेबेन दुबाकानरे
जांए को लेलकेबेन रे
जेताएको चिनाएकेबेन रे।।

मेला–टाँड़, बाजार–हाट
तुम एक साथ आओ–जाओ
तुम एक साथ खरीदो–बेचो
तुम एक साथ दर–दाम करो।
एक साथ चलते हुए
एक साथ बैठे हुए
जब कोई तुम्हें देखे
जब कोई तुम्हें पहचाने।।

हेएआ आकिनगे
हेएआ कुलगिआगे–
मेनतेको काजीका
मेनतेको बाकांड़ाएका।
लाइ: हासुरे, बोओ: हासुरे

हाँ भाई, वही दोनों हैं
हाँ भाई, पति–पत्नी हैं–
इसी तरह लोग कहें
इसी तरह लोग बोलें।
पेट दर्द में, सिर दर्द में

जी दुकुरे, होड़ोमो पोएरे	मन दुखी, देह रुग्न हो तो
कुपुलिआलोबेन गियुगोःआ	एक दुसरे को पूछने में लज्जा न करना
कुपुदुम आलोबेन सोरोमोःआ।।	आपस में पूछने में शर्म न करना।।
बाबा एंगा, कोदे एंगा	धान माँ, मडुआ माँ
उरि एंगा, मेरोम एंगा	गौ माता, बकरी माता
आबेनलोःको डोराएका	तुम्हारे साथ डेरा डालें
आबेनलोःको बासाएका।	तुम्हारे साथ वास करें।
कुपुलनिः कुटुमनिः	कुटुम्ब जो आएँ, बुधु जो आएँ
कोएनिः तेंगोमनिः	मांगने जो आएँ, याचने जो आएँ
आबेनाः ओड़ाः दुआराते	तुम्हारे घर से द्वार से
आबेनाः आंका–राबाआते।।	तुम्हारे आंगन घेरे से।।
सामा आलोको रुआड़ाका	खाली हाथ लौट न जाए
इपाएःआलोको आचुरका	छूछे हाथ वापस न जाएँ
सोबेनको सुकुआबेनका	तुम से सब खुश रहें
सोबेनको नापाएआबेनका।	सबको तुम पसन्द आओ।
आड़िरेआ कादाला लेका	आड़ पर के केले की तरह
कुंडिरेबाः मादलेका	मेड़ पर के बाँस की तरह
आदे लेका, रासुड़ि लेका	अदरख की तरह, लहसून की तरह
गांडाओःबेन, बुटाओःबेन।।	तुम वृद्धि पाओ, विस्तार पाओ।।
आबेनाः ओड़ाःरे, आबेनाः राचारे	तुम्हारे घर, तुम्हारे आंगन में
सोना गुगुरा, रुपा टाइंड़ि	सोने का घूंघरू, चाँदी की शहनाई
साड़िआकान ताइनका	हमेशा बजता रहे
रुम्बुलाकान ताइनका।	हमेशा गूंजती रहे।
दुनिया रेआः दाउड़िरे	दुनिया की दौड़ में
जिनिद रेआः जांगि रे	जीवन की चढ़ान में
चेतात तेगे राकाबबेन	तुम ऊपर को उठते रहो
जूग जोरोङ जीदोःबेन।।	तुम युग–युग जीते रहो।।

जीउ–जनतु, बुगिको ताइन	जीव–जन्तु स्वस्थ रहें
चेंड़े चिपरुब बुगिको ताइन	पंछी–पखेरू स्वस्थ रहें
दारु सिङ बुगिका ताइन	घास–फूस, स्वस्थ रहें
तासादरुड़ाः बुगिनका ताइन।	पेड़–पौधे स्वस्थ रहें।
होयोदाः बुगिगेका ताइन	हवा–पानी ठीक रहे
ओतेहासा बुगिनगेका ताइन	धरती–मिट्टी ठीक रहे
रेएद रानुबुगिनगेका ताइन	जड़ी–बूटी ठीक रहे
सा सोमाए बुगिनगेका ताइन।।	ऋतु क्रम ठीक रहे।।
आबेनलोः आले हागा सोबेन	तुम्हारे साथ हम सभी बंधु
आबेनलोः आले कुपुल सोबेन	तुम्हारे साथ हम सभी कुटुम्ब
सोबेन बुगिगेबु ताइनका	हम सभी कुशल रहें
सोबेन नापाएगेबु ताइनका।	हम सभी स्वस्थ रहें।
नेरे हिजुःआकान बोंगाकोआते	यहाँ आए हुए देवताओं से
नेरे सेटेराकान देवताकोआते	यहाँ आए हुए देवियों से
ओड़ाःरेन हाड़ाम होड़ोकोआते	घर के बड़े बूढ़ों से
रोसोम रेन पुर्खा प्रजाकोआते।।	घर के पूरखे–पूर्वजों से।।
मोड़े हागा हातुरेन	हम पाँच भाई गाँव के
कुपुल गंगा दिसुमरेन	हम कुटुम्ब बंधु देश के
नेआगेले सानाङताना	यही शुभ कामना करते हैं
नेआगेले आसाराएःताना।।	यही शुभेक्षा करते हैं।।
(सांगिते सिङबोंगा गोआरि हो गोआरि, मेनजालोः चाउलिजाङ हेरोःताना। एन तायोमने कोनेआ–बोओरकिन एंगा– आपु, हागा–कुपुलकोकिन जोआराकोताना। सुमदि भेंट। एन तायोमते चुमाड़ा।)	("सिङबोंगा गोआरि हो गोआरि" समवेत उच्चरित होता है और साथ ही अक्षत दान। वर–कन्या, माता–पिता और कुटुम्ब–बंधुओं को जोहार करते हैं। समधि भेंट। चुमावन।)

आड़ान्दि दुराङ को विवाह गीत

1

एंगामेको चुमाड़ादो	तुम्हारी माताओं का चुमावन
आपुमेको चुमाड़ादो	अपने पिताओं का चुमावन
सोना लेका तेलाएमे	सोने की तरह स्वीकार करो
रुपा लेका आताङेमे, सुगाड़ा।।	रूपा की तरह अंगीकार करो हे प्रिय।।
एंगामेको दुलाड़ादो	तुम्हारी माताओं का दुलार
आपुमेको दुलाड़ादो	तुम्हारे पिताओं का दुलार
सोना लेका तेलाएमे	सोने की तरह स्वीकार करो
रुपा लेका आताङेमे, दुलाड़ा।।	चाँदी की तरह ग्रहण करो हे प्रिय।।
एंगामेको सुगाड़ादो	तुम्हारी माताओं का प्यार
आपुमेको सुगाड़ादो	तुम्हारे पिताओं का प्यार
सोना लेका तेलाएमे	सोने की तरह स्वीकार करो
रुपालेका आताङेमे, दुलाड़ा।।	चाँदी की तरह ग्रहण करो, हे प्रिय।।

2

ओको सा:आते: होयोलेदा, एयाङ	हे माँ, किधर से हवा आई
चेतान लारिदो गुले–गुले, एयाङ	ऊपरी बादल उपड़–घुमड़ रहा है
चेतान लारिदो गुले–गुले।	ऊपरी बादल उमड़–घुमड़ रहा है।।
चिमाए सा:आते राम्पिलेदा, एयाङ	हे, माँ किधर से झोंका आया
लातार सा:आते आलाए–बालाए, एयाङ	निचला बादल उथल–पुथल रहा है
लातार सा:आते आलाए–बालाए।।	निचला बादल उथल–पुथल रहा है।।
चेताना:ते होयोलेदा, एयाङ	ऊपर की तरफ से हवा आई, हे माँ
चेतान लारिदो गुले–गुले, एयाङ	ऊपरी बादल उपड़–घुमड़ रहा है, हे माँ
चेतान लारिदो गुले–गुले।	ऊपरी बादल उमड़–घुमड़ रहा है।
लाताराते राम्पिलेदा, एयाङ	हे, माँ किधर से झोंका आया, हे माँ
लातार सा:आते आलाए–बालाए, एयाङ	निचला बादल उथल–पुथल रहा है, हे माँ।
लातार सा:आते आलाए–बालाए।।	निचला बादल उथल–पुथल रहा है।।

चेतान लारिदो गुले–गुले, एयाङ	ऊपरी बादल उमड़–घुमड़ रहा है, हे माँ
सोना दाःदोएः गामालेदा, एयाङ	सोने–से पानी की वर्शा हुई, हे माँ
सोना दाःदोएः गामालेदा	सोने–से पानी की वर्शा हुई।
लातार लारिदो आलाए–बालाए, एयाङ	निचला बादल उथल–पुथल रहा है
रुपा दाःदोएः राम्पिलेदा, एयाङ	रूपे–से पानी की झड़ी लगी है, हे माँ
रुपा दाःदोएः राम्पिलेदा।।	रूपे–से पानी की झड़ी लगी।।
सोना दाःदोएः गामालेदा, एयाङ	सोना–सा पानी बरसा, हे माँ
सोना गेगा ओमोन जाना, एयाङ	सोना ही उग आया, हे माँ
सोना गेगा ओमोन जाना।	सोना ही उग आया।
रुपा दाःदोएः राम्पिलेदा, एयाङ	चाँदी–सी झड़ी लगी, हे माँ
रुपा गेगा बुसाड़ा जाना, एयाङ	चाँदी ही उग आयी, हे माँ
ओतेदो बुसाड़ाजाना।।	चाँदी ही उग आयी है।।
हाराजाना माताजाना, एयाङ	वह बढ़ा, वह पला, हे माँ
सिरमा दो दालोबजाना, एयाङ	आकाश में छा गया, हे माँ
सिरमा दो दालोबजाना।	आकाश में छा गया।
नाड़ि जाना कोतोजाना, एयाङ	उसकी लता फैली, डाल फैली, हे माँ
ओतेदो गुगुंलाजाना, एयाङ	धरती में फैल गई, हे माँ
ओतेदो गुगुलाजाना।।	धरती में फैल गई।।

3

सिंगिदाएः तुरलेना, उमा	सूरज उग आया, हे माँ
कोड़ा होनदोएः जोनोमलेना, उमा	लड़के का जन्म हुआ, हे माँ
कोड़ा होनदोएः जोनोमलेना।	लड़के का जन्म हुआ।
चाण्डुः दोएः मुलुःलेना, उमा	चाँद उग आया, हे माँ
कुड़ि होनदोएः उपानलेना, उमा	लड़की की उत्पत्ति हुई, हे माँ
कुड़ि होनदोएः उपानलेना।।	लड़की की उत्पत्ति हुई।।
कोड़ा होनदोएः जोनोमलेना, उमा	लड़के का जन्म हुआ, हे माँ
गोंड़ा दो उजाड़ा जाना, उमा	गोहार घर उजड़ गया, हे माँ
गोंड़ा दो उजाड़ा जाना।	गोहार घर उजड़ गया।
कुड़ि होनदोएः उपानलेना, उमा	लड़की का जन्म हुआ, हे माँ
गोंड़ा दो पेरेःजाना, उमा	गोहार घर भर गया, हे माँ
गोंडा दो पेरेःजाना, उमा।।	गोहार घर भर गया।।

4

ने पुताम रानाः दो,	इस पण्डुक की आवाज,
ने पुताम रानाः दो,	इस पण्डुक की आवाज,
सेरेङ चेतान लातारातें	चट्टान के ऊपर से, नीचे से
गुगुचुइः मेनेआ।।	यह "गुगुचू" बोलता है।।
ने पुताम रानाः दो,	इस पण्डुक की आवाज
ने पुताम रानाः दो,	इस पण्डुक की आवाज,
कुपुल कुटुम्ब बाङको लेका	जैसे कि उसके कोई भाई–बिरादर न हों
गुगुचुइः मेनेआ।।	यह "गुगुचू" बोलता है।।

5

ओकोए रागे आदिङ बितार	कौन रोए घर के भीतर
ओकोए रागे मांचि चेतानरे	कौन रोए मचिया पर बैठे हुए
ओकोए–आकोए रागे डाड़िदाः रे	कौन–कौन रोएं डाड़ी के घाट पर
ओकोए रागे माण्डोआ ताला रे।।	कौन रोए मण्डप के बीच।।
एंगा रागे आदिङ बितार	माँ रोए घर के भीतर
आपु रागे मांचि चेतानरे	बाप रोए मचिया पर बैठे हुए
गाति–सोंगोतिको रागे डाड़िदाः रे	साथी–सहेली रोएं डाड़ी के घाट पर
कोनेआ रागे माण्डोआ ताला रे।।	कन्या रोए मण्डप के बीच।।

6

निले रिम्बिल गुले–गुले, उमा	नीले आसमान का गोल विस्तार, हे माँ
सिंगी–चाण्डु–इपिल बेगार सोभागे बानोगा।	सूरज–चाँद तारा के बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
लारि बेगार, हिचिर बेगार सोभागे बानोगा।	बादल बिना बिजली बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
जिलिमिलि ओते दिसुम, उमा	झिल–मिल देश धरती, हे माँ
जीउको बेगार, दारुको बेगार सोभागे बानोगा।	जीव बिना, वृक्ष बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
बिरको बेगार, गाड़ाको बेगार सोभागे बानोगा।।	वन बिना, नदी बिना उसकी कोई शोभा नहीं।।

आटा–माटा बिरको ताला, उमा	घने जेगल के बीच, हे माँ
साराम–सिलिब–साइल बेगार सोभागे बानोगा।	सांभर–हिरण–नीलगाय के बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
नाड़िको बेगार, तांड़िको बेगार सोभागे बानोगा।	लता बिना, लरंग के बिना उसकी कोई शोभा नहीं।।
बान्दा–पुकुरि बिजिर–बिजिर, उमा	बांध–पोखर चमचमाता, हे माँ
पुटिः बेगार, दाः बेगार, सोभागे बानोगा।	सोता बिना पानी बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
हाइको बेगार चोकेको बेगार सोभागे बानोगा।।	मछली बिना मेंढ़क बिना उसकी कोई शोभा नहीं।।
जोका–जुड़ि कुलगिआरे, उमा	युगल जोड़ी पति–पत्नी, हे माँ
होनको बेगार, गांड़ाको बेगार सोभागे बानोगा।	बच्चा बिना, संतान बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
हागा–कुपुल, कुटुम बेगार सोभागे बानोगा।	भाई–बंधु, कुटुम्ब बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
आड़ान्दि–बाला, राचा पाटि, उमा	शादि विवाह, आँगन में चट्टाई, हे माँ
लान्दा बेगार, जागार बेगार सोभागे बानोगा।	हँसी बिना, बात बिना उसकी कोई शोभा नहीं।
गोप बेगार, दुराङ बेगार सोभागे बानोगा।।	गप्प बिना, गीत बिना उसकी कोई शोभा नहीं।।

7

जोमे, बालाको जोमेपे	मेहमानो, खाना खा लो
नू बालाको नूइपे	मेहमानो, पेय पी लो
दिरि रुगुड़ि मांडि	कंकड़ मिला खाना
बालाको जोम लेकापे।।	हे मेहमानो खाकर देखो।।
जोमे, बालाको जोमेपे	मेहमानो, खाना खालो
नू बालाको नूइपे	साथियों, पेय पी लो
जोजो मोराएः इलि	खट्टा–सीठा पेय
बालाको नू लेकापे।।	हे मेहमानों खाकर देखो।।

जोमे दोले जोमेआ
नू दोले नूइआ
सोना लेकान काजि
बालाको ताइकोःका।।

खाने को हम खाएंगे
पीने को हम पीएंगे
सोने–सी हमारी बात, हे मेहमानो
सदा के लिए रह जाए।।

जोमे दोले जोमेआ
नू दोले नूइआ
रुपा लेकान बाकांड़ा
बालाको ताइनोः का।।

खाने को हम खाएंगे
पीने को हम पीएंगे
चाँदी सी हमारी जबान, हे मेहमानो
सदा के लिए रह जाए।।

8

मेतामेआको, दुलाड़ा (2)
चारिगो काएः चाटागा
पाटिओ काएः गालाङा
मेतामेआको, दुलाड़ा।।

लोग बोलते हैं, प्रिय (2)
तीलियाँ भी नहीं बनाती
चट्टाई भी नहीं बिनती
लोग बोलते हैं, हे प्रिय।।

मेतामेआको, दुलाड़ा 2
नायालो काएः बाबाइआ
लोयोङ काएः बाबाइआ
मेतामेआको, दुलाड़ा।।

लोग बोलते हैं, प्रिय (2)
हल भी नहीं बनाता
खेत भी नहीं बनाता
लोग बोलते हैं, हे प्रिय।।

उदुबाकोपे, एआङगा 2
ढाकि पेरेः कालुः पुडुः
पिड़िंगि चेतान किताबांडि
उदुबाकोपे एआङगा।।

तुम उन्हें बताओ, हे माँ (2)
टोकरी भर दोना–पत्तल
पीढे पर खजूर की घुंडी
तुम उन्हें बता दो, हे माँ।।

चुण्डुलाकोपे, एआङगा 2
बुरु चेतान–जारागोड़ा
लोओर लातार बारु सोकोड़ा
चुण्डुलाकोपे, एआङगा।।

तुम उन्हें दिखा दो, हे माँ (2)
पहाड़ के ऊपर साफ मैदान
नीचे घाटी में बना खेत
तुम उन्हें दिखा दो, हे माँ।।

9

आबेन चि मिसाते रोआलेद 9
होरा रे जुड़ि उलिकिन
मिसाते जुम्बुलिजान
मिसाते जुम्बुलिजान।।

क्या तुम्हीं ने एक साथ रोपा था
रास्ते में आम के जोड़े?
इसमें एक साथ फल लगे
इनमें एक साथ फल लगे।।

आबेन चि मिसाते पोआलेद
डारे रे जोता कुदाकिन
मिसाते जुम्पाजान
मिसाते जुम्पाजान।।

क्या तुम्हीं ने एक साथ लगाया था
डगर पर जामुन का जोड़ा?
इनमें एक साथ फल लदे
इनमें एक साथ फल लदे।।

आबेन चि मिसाते उरेलेद
बुरु रे जुड़ि बांदाकिन
मिसाते पेरेःजान
मिसाते पेरेःजान।।

क्या तुम्हीं ने एक साथ कोड़े थे
पहाड़ पर दो बांध?
इनमें एक साथ पानी भर आया
इनमें एक साथ पानी भर आया।।

आबेन चि मिसाते गेलेःकेद
बेड़ारे जोता डोबाकिन
मिसाते पारिड़िजान
मिसाते पारिड़िजान।।

क्या तुम्हीं ने एक साथ बनाए
घाटी में दो जलाशय
इनमें एक साथ पानी बह निकला
इनमें एक साथ पानी बह निकला।।

10

आञ दो उमा सेनोःताना, उमा
लादानाकोलोःञ सेनोःताना, उमा
लादानाकोलोःञ सेनोःताना।
आञदो उमाञ बिरिदताना, उमा
बेपारी कोलोःञ बिरिदताना
बेपारी कोलोःञ बिरिदताना।।

मैं तो जा रही हूँ, हे माँ
लदना वालों के साथ जा रही हूँ, हे माँ
लदना वालों के साथ जा रही हूँ।
मैं तो निकल रही हूँ, हे माँ
व्यापारियों के साथ निकल रही हूँ, हे माँ
व्यापारियों के साथ निकल रही हूँ।।

लादानाकोलोःञ सेनोःताना, उमा
पुण्डि सादोम बिजिर बालाङ, उमा
पुण्डि सादोम बिजिर बालाङ।
बेपारी कोलोःञ बिरिद ताना, उमा
रांगा चाउडाल डुगु–मुगु, उमा
रांगा चाउडाल डुगु–मुगु।।

लदना वालों के साथ जा रही हूँ, हे माँ
सफेद घोड़ा चमकता हुआ, हे माँ
सफेद घोड़ा चमकता हुआ।
व्यापारियों के साथ जा रही हूँ, हे माँ
लाल डोली डगमग करती हुई, हे माँ
लाल डोली डगमग करती हुई।।

•••

संदर्भ सूची

Bodding, P. O. (1942), *Traditions and institutions of the Santals* (Oslo: N. W. Brogess).

Dalton, E. T. (1960), *Descriptive Ethnology of Bengal* (Calcutta: Firma K. L. Mukhopadhyay).

Elwin, V. (1952), *Myths of middle India* (Bombay: OUP).

—— (1954), *Tribal myths of Orissa* (Bombay: OUP).

—— (1955), *Religion of an Indian tribe* (Bombay: OUP).

—— (1958), *Myths of Northeastern Frontier of India* (Shillong: NEFA).

Good, W. G. (1964), *Religion among the primitives* (London: Free Press).

Griffith, R. T. (1963), *Vedic hymns* (Varanasi: Motilal Banarsidas).

Hoffmann, J. (1993), *Encylopaedia Mundarica* 16 vols (New Delhi: Gyan Publishing House).

Kullu, P. (1988), *Kharia dharam aur sanskriti ka vishleshan* (Ranchi: Satya Bharati).

Leslie, C. (1960), *Anthropology of folk religion* (New York: Vintage Books).

Levi-Strauss, C. (1964), *The savage mind* (Chicago: University of Chicago Press).

McDugal, J. (1985) *Land or Religion*. New Delhi (Manohar).

Majumdar, D.N. (1950) *Affairs of a Tribe*. Lucknow (Folklore Institute).

Malinowski, B. (1954) *Magic, Science and Religion*. New York (Doubleday), 1954.

Mander, J. (1991) *In the absence of the Sacred.* San Francisco (Sierra Club).

Ponette, P. (n.d.) *Singbonga and the Spirit World of the Mundas.* Ranchi (Catholic Press).

Roy, S.C. (1915) *The Oraon Religion and Customs.* Ranchi (Man in India Office).

—— (1912) *Mundas and Their Country.* Ranchi (Man in India Office).

Troisie, J. (1978) *Tribal Religion.* New Delhi (Manohar).

Van Exem, A. (1982) *The Religious System of the Munda Tribe.* Ranchi (Satya Bharati).

लेखक परिचय

Dr. RAM DAYAL MUNDA (1939-2011)
A BRIEF BIO DATA

Birth:

Village: Diuri, P.O. Tamar, Ranchi, Jharkhand, 1939.

Education:

Lutheran Mission School, Amlesa, Tamar, Ranchi, 1946-53.

S.S. High School, Khunti, Ranchi, 1953-57.

Ranchi University, Ranchi, 1957-63, M.A. (Anthropology).

University of Chicago, USA, 1963-70, M.A. PhD (Linguistics).

Research and Training:

Research Assistant, South Asian Languages and Civilizations, University of Chicago, 1963-70.

Assistant Professor- Associate Professor, South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1970-81.

University Professor, Tribal and Regional Languages, Ranchi University 1981-99.

Visiting Professor, Australian National University, Canberra, 1983.

Visiting Professor, Syracuse University, New York, 1996.

Visiting Professor, Tokyo University of Foreign Studies, 2001.

Fellowships:

American Institute of Indian Studies, 1977-78.

United States Education Foundation in India, 1996.

Japan Foundation, Tokyo, 2001.

Awards:

Sangeet Natak Akademi Award, Government of India, 2007

Padmashree, Government of India, 2010

Field of Research and Teaching:

Indian Languages and Literatures.

Tribal Peoples of India.

World Indigenous Movement.

Jharkhand Movement.

Reconstructing Jharkhand.

Administrative Services:

Pro Vice-Chancellor, Ranchi University, 1985-86.

Vice-Chancellor, Ranchi University, 1986-88.

Legislative Services:

Member of Parliament, Rajya Sabha, Government of India, 2010-11

Membership in National/International Committees/Organizations:

1. Committee on Jharkhand Matters, Government of India, 1989-95.
2. Anthropological Survey of India, 1989-95.
3. National Education Policy Review Committee, 1990.
4. Steering Group, Planning Commission, 1996-2000.
5. Expert Committee, National Commission, Women, 1997-2000.
6. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief President).
7. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief Advisor).
8. National Advisory Board, International Labour Organization (ILO), 1997-2000.
9. Executive Committee, Jawaharlal Nehru University, 1990-1995.
10. Executive Committee, North Eastern Hill University, 1993-1996.
11. Jharkhand Peoples Party, 1991-98(Chief President).
12. Adim Jati Seva Mandal, 1990-2011. (President)
13. Jharkhand Sanskritik Morcha, 1998-2011 (President).
14. Ranchi University PG Teachers' Association, 1998-2000 (President).
15. Bharatiya Sahitya Vikas Nyas, 1998-2011 (Secretary).
16. Binrai Institute of Research and Action, 1997-2011 (President).
17. Standing Committee, Human Rights Education University Grant Commission, 1998-2001.
18. National Committee for Promotion for Social & Economic Welfare, 1998-2001.
19. Expert Committee, Sahitya Academy, 1999-2011.
20. National Council for Teachers Education, 2000- 2003.
21. Working Group on Empowerment of Scheduled Tribe, Planning Commission, 2000-2005. (Chairman).
22. All India Literary Forum, (President, 2005-2011).
23. Technical Support Group for Formulation of Rules to Operationalise the Schedule Tribe and Other Traditional Forest Dwellers

(Recognition of Forest Rights) Act, 2006, Ministry of Tribal Affairs, Government of India, 2007, (Member).

24. Committee to Setup Central Tribal University, 2007, (Member).
25. Tribal Advisory Council, Government of Jharkhand , 2010 (Chairman in-charge)
26. Sangeet Natak Akademi, Government of India, 2009-11 (Executive Board Member)
27. National Advisory Council, Government of India, 2010-11 (Member)

Participation in International Meetings/Conference:

1. Festival of India in USSR, 1987 (Leader of the delegation).
2. International Music Workshop, Bali, Indonesia, 1988.
3. International Dance Alliance, Manila, Philippines, 1989.
4. International Folk Dance Festival, Taipei, 1990.
5. Adivasi Campaign in Europe, 1993.
6. Dalit Campaign in Europe, 1994.
7. International Conference on Indigenous Economy, Copenhagen, Denmark 1997.
8. United Nations Working Group on Indigenous Populations, Geneva, 1987-Present (Leader of the delegation).
9. International Alliance for Indigenous Peoples of the Tropical Forests, Nagpur, 1998.
10. Asian Indigenous Peoples' Conference on UN Permanent Forum on Indigenous. Peoples, Indore, 1999.
11. International Conference on Hunting and Games, Berlin, 2000.
12. International Conference on Indigenous Peoples, Upsala, Sweden, 2002.
13. Asian Indigenous Peoples Conference on UN Permanent Forum on Indigenous Issue, Bangkok, 2002.
14. The UN Permanent Forum on Indigenous Issues, New York, 2002-Present.

Publications:

1. Four Mundari Jadur Songs in THE EAST WEST REVIEW 2(3), 1966 (with Norman Zide).
2. HISIR (Necklace, Modern Mundari Songs), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967
3. SELED (Miscellaneous Poems in Mundari, Nagpuri and Hindi), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967

4. PROTO-KHERWARIAN SOUND SYSTEM, Department of South Asian Languages and Civilization, University of Chicago, 1967

5. Songs on Birsa and his Movement inJournal of Social Research 12, Department of Anthropology, Ranchi University, 1969 (with Norman Zide)

6. Descriptive Dialogue Songs in Mundari in M.C. Pradhan, P.K. Mishra and D.J. Shastri(Eds.) ANTHROPOLOGY AND ARCHEOLOGY, Oxford University Press, Bombay, 1969 (with Norman Zide).

7. Aspects of the Mundari Verb in Indian Linguistics 30, 1969.

8. Structural influence of Bengali Vaishnav songs on Traditional Mundari songs in JOURNAL OF SOCIAL RESEARCH 13, Department of Anthropology, Ranchi University, 1970.

9. MUNDARI G*TKR, SHRI BUDU BABU AUR UNKI RACHNAE, Adivasi Sahitya Parishad, Ranchi, 1974.

10. OCEAN OF LAUGHTER, English Translation of Hsyrnava (The Sanskrit Play by Jagadishwara Bhattacharya), Writers Workshop, Calcutta, 1975 (with David Nelson).

11. STRUCTURAL FEATURES OF THE VAISHNAV SONGS OF PARGANA BANGALI, PhD Thesis, Department of Linguistics, University of Chicago, 1975.

12. KALYN*, English translation of the KALYN* (Hindi Novel by Jainendra Kumar), Department of South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1976(with Paul Staneslow and Mark Johnson).

13. Some Formal Features of Mundari Traditional Poetry in Philip Jenner, Lawrence Thompson and Stanly Starosta (Eds) AUSTRO ASIATIC STUDIES, University of Hawaii Press, 1976

14. HOLY MAN FROM JAMANIA, English Translation of the Hindi novel JAMANIA K BB by Nagarjuna, Writers Workshop, Calcutta, 1977 (with Paul Staneslow).

15. Word Deformation in Mundari Song Texts in Peter Ponette (Ed) MUNDA WORLD, Catholic Press, Ranchi 1978(with Norman Zide).

16. KUCHH NAE NGPUR* G*T (Songs in Nagpuri), Nagpuri Sahitya Parishad, Ranchi, 1978.

17. MUNDR* VYKARAN (Mundari Grammar), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1979.

18. DHRUWA SWAMINI, English Translation of Hindi Play by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis. Also in JOURNAL OF SOUTH ASIAN LITERATURE 14, Michigan State University Press, 1979 (with Paul Staneslow).

19. Tribal development in JHARKHAND in P. Das Sharma(Eds)PASSING SCENES IN CHOTANAGPUR, Maitree Publications, Ranchi, 1980.

20. EEA NAWA KAANIKO (Seven New Stories), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
21. TITLI, English Translation of the Hindi Novel by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis,1980(with Paul Staneslow).
22. NAD* AUR USKE SAMBANDH* TATH ANYA NAG*T, Jharkhand Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
23. THE SUN CHARIOTEER, English Translation of Hindi long poem RASHMIRATHI by Ramdhari Singh Dinkar, Department of South Asia Studies, University on Minnesota,1981 (with Paul Staneslow and David Nelson).
24. LANGUAGE OF POETRY, Classical Publication, Delhi, 1981.
25. BIRSA MUNDA, Hindi Translation of the BENGALI BIRSA MUNDA by Mahasweta Devi, Ekta Prakashan,Chaibasa,1981.Second edition, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2000.
26. WAPASI, PUNARMILAN AUR ANYA NAG*T, Jharkhand Sahitya Parishad, 1985.
27. ALL JHARKHAND STUDENTS UNION KA SAMVIDHN, Ranchi, AJSU, Ranchi, 1986(with S. Basu Malik, Suraj Singh Besra and Deosharan Bhagat).
28. MEMORANDUM OF JHARKHAND COORDINATION COMMITTEE, JCC, Ranchi, 1987 (with B.P.Keshari, Santosh Rana, S. Basu Malik, and Suraj Singh Besra) .
29. JHARKHAND VRT, Position Paper for talks between the JCC and the Central Government, JCC, Ranchi, 1989 (with B.P.Keshri).
30. Tribal Identity: The Crisis and the Way Out in Karuna.M.Braganza and S.Peeradina(Eds) CULTURAL FORCES SHAPIG INDIA, (Macmillan) Bangalore, 1989 . Also in RELIGION AND SOCIETY 36, Bangalore, 1989.
31. Jharkhand Movement, Retrospect and Prospect in JOURNAL OF SOCIAL CHANGE, Council for Social Development, Delhi, 1990.
32. JHARKHAND PEOPLES PARTY KA SAMVIDHN, JPP Office, Ranchi, 1990 (with Suraj Singh Besra and Devsharan Bhagat).
33. Dispossession and Exploitation of Tribal Peoples Through Communication Manipulation, with Special reference to Jharkhand in RELIGION AND SOCIETY 38,1991
34. Recent Development in Jharkhand Movement in INDIA INTERNATIONAL QUTERLY, Indian International Centre, 1992.
35. Introduction to Indigenous and Tribal Solidarity, ICITP, Delhi, 1997.
36. BHURIA COMMITTEE REPORT AUR JHARKHAND KI SHETRA ME USK KRYNVAYAN, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 1997.

37. Abstract on Socio-Cultural Rights: Language, Education and Cultural Identity in B.K. Roy Burman and B.G. Verghese (Eds) ASPIRING TO BE, Delhi, Konark Publication, 1995.

38. An Insiders View of the Struggle for Jharkhand in JAI JHARKHAND, Coimbatore, Sarini, 1999.

39. Adivasi Identity in RISING FACISM, Delhi, Update Collection, 2000.

40. ADI DHARAM, Religious Beliefs of Adivasi of India, Sarini, Coimbatore, 2000. Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001. Bangali, Sail Rakab Puthi Centre, 2002.

41. ADIVASI ASTITVA AUR JHARKHANDI ASMITA KE SAWL, Prakashan Sansthan, Delhi, 2001.

42. ADANDI BONGA (WIVH MANTRA), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001 (with Ratan Singh Manki).

43. JI-TONOL (MAN BANDHAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

44. JI-RANAVA (MAN BICHHURAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001.

45. ENEON (JGARAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

46. BA (H) BONGA (SARHUL MANTRA), Mundari- Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

47. REPORT OF THE WORKING GROUP ON EMPOWERMENT OF THE SCHEDULE TRIBES DURING THE TENTH FIVE YEAR PLAN, Planning Commission, Government of India, Delhi, 2002.

48. GONOE? PAROMEN BONGA (SHRDDHA MANTRA), Mundari Hindi Version, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2003(with Ratan Singh Manki).

49. JHARKHAND MOVEMENT, Indian Social Institute, Delhi, 2000 (with S. Basu Malik).

50. GLOBALISATION AND THE CHALLENGES OF TRIBAL DEVELOPMENT (Dr. Durgabai Deshmukh Memorial Lecture), Council for Social Development, New Delhi, 2005.

51. ADI DHARAM, BHRATIYA ADIVSIYAON KI DHRMIK ASTHYEN, New Delhi (Rajkamal Prakashan), 2009.

52. SOSOBONGA (BHELWA PjJAN) PUNARNAVISRIT, New Delhi(Rajkamal Prakashan) in press.

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां :

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन–

- रांची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में रांची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रित रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका–यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों (1963–81) के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन–अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फ़ोक पर्फोमर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्य अमेरिका प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद रांची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ आदिवासी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दखिण–पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपीन) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989–2000) में सक्रिय सदस्यता एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला–खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा

मुण्डा की विशालकाय (18') प्रतिमा एवं, 80' शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।

- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरा (ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र) के पुनर्जागरण एवं विस्तार–प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत–नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कायेक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिय भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति–नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा को एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधरम को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधरम' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

रतन सिंह मानकी (संक्षिप्त परिचय)

जन्म	–	1954 ई. ग्राम– किताहातु, पोस्ट– सोयको, मुरहू, खूंटी।
शिक्षा	–	प्राथमिक मध्य विद्यालय, मुरहू; मध्य विद्यालय, कुड़ापूर्ति, अनिगड़ा; हाई स्कूल, ,खूंटी; लक्ष्मीनारायण उच्च विद्यालय, मुरहू (1976–1971)
प्रशिक्षण	–	टर्नर, आई.टी.आई., हेहल, रांची (1974–1976); सी. टी.आई., एच.ई.सी. (1976–1977)।
सदस्य	–	भू–रक्षा समिति, 1978 में भू–सर्वे के विरुद्ध आंदोलन में सक्रिय। सम्पूर्ण खूंटी प्रमंडल का दौरा। सरना समाज केन्द्रीय समिति खूंटी के अध्यक्ष (1978 से अब तक)।
सम्प्रति	–	एच.ई.सी. में सेवारत (1990–2014)

आदि धरम की विशेषताएँ

(1) परमेश्वर (सिङबोंगा, चांदोबोंगा, धर्मेस इत्यादी) का सामाजिकृत स्वरूप (पिता, पितामह) अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। आदिवासियों के बीच 'आजा–नाती' का संबंध सबसे मधुर माना जाता है। परमेश्वर मनुष्य के साथ इसी नातेदारी में बंधा है।

(2) प्रकृति के विशिष्ट अवयवों (पहाड़, नदी, जंगल इत्यादी) को ही परमेश्वर के प्रतीकात्मक सर्वश्रेष्ठ 'घर' के रूप में स्वीकार करना। कृत्रिम संरचनाएँ– मंदिर, मसजिद, गिरजा इत्यादी आवश्यक नहीं।

(3) मनुष्य के अमरत्व में विश्वास करना। यहाँ प्रतिकात्मक अमरत्व प्रतिबिंबित हुआ है मृतक की आत्मा की छायारूप में घर वापसी के अनुष्ठान में, जो कि थोड़े–बहुत अंतर के साथ सभी आदिवासी समुदायों में संपन्न होता है।

(4) आदिधरम व्यवस्था में मनुष्य पाप–पुण्य और स्वर्ग–नरक की अवधारणाओं से अपेक्षाकृत कम ग्रसित है। समाज सम्मत काम ही पुण्य है और समाज विरोधी काम पाप। आदमी स्वर्ग, नरक या अन्यत्र कहीं नहीं जाता। सामाजिकता ही स्वर्ग है, असामाजिकता नरक।

(5) बिना किसी मध्यस्थता (पंडित, मौलवी, पादरी इत्यादी) के परमेश्वर से सीधे जुड़ने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता। आदिवासी के सभी अनुष्ठान न्यूनतम कर्मकांड से संपन्न होते है।

(6) सृष्टि के अन्य अवदानों (सजीव, निर्जीव) के साथ समानता और पारस्पारिक सम्मान बोध के आधार पर सहअस्तित्व। मनुष्य को सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ मानने की धृष्टता नहीं।

(7) आदिधरम सृष्टि के साथ ही स्वतः स्फूर्त है, कालातीत है। किसी अवतार, मसीहा या पैगंबर पर आश्रित नहीं।

होड़ोहोन कोआः ताला रे होबाओःतान
आड़ान्दिको रे बोओंगानिः देंगाओःकाएः मेनते
नेआ किताबलिङ बाइ तादा। नेआ किताब रे आबुआः ताला रे
होबाओःतान आड़ान्दि बोंगालिङ ओल गाराङ तादा
मेनदो नेआ किताब मिआद उदुब होरा लेका गे
मेनोःका–बिनगा–बिनगा हातु–दिसुम रे
होड़ोकोआः बिनगा–बिनगा मानातिङको ताइना एना
उड़ुः केआते होड़ोको आपान लेकाते नेआ किताब
कामि रेको आउ दाड़िआ।

प्रस्तुत पुस्तिका में हमने मुण्डा समुदाय में प्रयुक्त विवाह मंत्र का विस्तृत स्वरूप रखने की चेष्टा की है ताकि इस समुदाय में इसका प्रयोग एक पाठ के रूप में करने में सहूलियत हो सके किन्तु इसके वर्तमान स्वरूप में भी यह एक प्रस्तावित प्रारूप ही है – क्षेत्रीय विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए लोगों को पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि परिस्थिति के अनुसार इसे पुनर्गठित कर सकें।

डॉ. रामदयाल मुण्डा
रतन सिंह मानकी

Printed at : **I.D.Publishing**, Ranchi # 9534123144

रुम्बुल
"दिरि ओड़ाः", सरनाटोली - हतमा, राँची कॉलेज के पीछे,
राँची - 834008, झारखण्ड, भारत।
ईमेलः rdm.rumbul@gmail.com

ISBN 9788193275443

बारजागारते
द्विभाषीय

गोनोङ - 50 टाका
मूल्य - 50 रुपए